उहर

भोजपुरी जनवादी अनियतकालिक पत्रिका

सम्पादक

रजनीकान्त राकेश

अगस्त- १९७७

आदरणीय श्री ब्रजकिशोर जी
को
सादर

डहर

भोजपुरी जनवादी

अनियत कालिक-पत्रिका

वरिस-१ अंक-१

अगस्त' ७७

●

प्रधान सम्पादक

रजनीकान्त 'राकेश'

(अवैतनिक)

●

सम्पादक-मंडल

ध्रुव त्रिवेदी

शिवकान्त 'सुमन'

●

प्रकाशन

मृत्युंजय प्रकाशन

मोतीहारी

●

सम्पर्क-सूत्र

सम्पादक – डहर

जनवादी साहित्य-मोर्चा

अगरवा, मोतीहारी

पूर्वी चम्पारण (बिहार)

●

सहयोग-राशि

एक प्रति के - १-५० पैसे

चारि अंक के अगवड़ -

पाँच रुपिया

●

मुद्रक

युगान्तर प्रेस एवं प्रकाशन

मोतीहारी

सम्पादकीय—

'डहर' (राह) भोजपुरी के नवा चेतना के नवा डहर ह। जवना डहर प चलि के भोजपुरी अपना महेली भासा का सोझा सीना तानि के चलि सकी। हम दावा करतानी कि 'डहर' अपना क्रान्तिकारी कारनामा से आवेवाली पीढ़ी खातिर एगो नया जनवादी राह के उरेह करी। जवन टेढ़ मेढ़, ऊबड़ खाबड़ आ घचपच ह ना होई बलुक साफ-सुथरा आ सपाट होई।

भोजपुरी दिन-दूना आ रात चौगूना तरक्की करे आ एकरा हर विधा में निखार आवे ईहे 'डहर' के मनसा बा।

मेहनतकस मजदूर, गरीब किसान आ मझोला बुद्धिजीवी वरग जे सदियन से जवना सामन्ती बेवस्था पिसात रहल बा; ओह पूंजीवादी सामन्ती बेवस्था आ ओकर पछधर पिछलगुआ लोग जे एकरा के कायम राखे खातिर पूरा पूरी जिम्मेवार बा, ओह लोग के ई ढिठई, लुच्चई आ अतेयाचार के जरि सहित उखारि के धूरा में मिलावे खातिर उखमदल जवना साहित्कार के दिल आ दिमाग में इन्किलाब के आगि धन्हकता; जे अपना अधिकारन खातिर पूरा-पूरा जागरूक बा आ ओकरा खातिर जुझार प उतारु बा, ओह इन्कलावियन के एह घातक पूंजीवादी-सामन्ती परम्परा के खिलाफ मोर्चा-बादी में एक जुट होके कारगर कदम बढ़ावे वाला एह लामा अभियान में साझेदार होके पयान करे खातिर डहर' ललकारता आ साथ हीं पोंगा-पंथियन के वर्त्तमान साहित्य से वर्त्तमान आ आवे वाली पीढ़ी के गुमराह ना बलुक हिजड़ा बना रहल बा ओकरा खिलाफ जेहाद छेड़ता!

★

www.bhojpurisahityangan.com

निबंध

साहित्य आ जनवाद

—श्री उमाकान्त शुक्ल

'साहित्य आ जनवाद' का बारे में कुछ बाति जइसे 'जनवादी साहित्य' 'जनता खातिर साहित्य' आ 'जनता के साहित्य' खास चरचा के जोग बा। अकसरहाँ आजु-कालहु जवना अरथ में 'जनतंत्र' लियाता ठीक ओही अरथ में 'जनवाद' शब्द नइखे। अनेक बरग आ बेवस्था वाला समाज में 'जनतंत्र' के अरथ-अरग माने होला। पूँजीवादी समाज में जनतंत्र के नांव पर जवन बेवस्था कायम बा, दरअसल ऊ पूँजीवादी जनतंत्रह। पूँजीवादी जनतंत्र में साफ-साफ देखल जा सकेला कि सासन ओही लोग का हाथ में समेटाइल बा, जेकर उत्पादन के साधन प मलिकांव बा। मतलब ई भइल कि पूँजीवादी समाज बेवस्था में पूँजीपति बरग जे सांच माने में पूरा जन संख्या के पाँच से दस फिसदी तक बा; सासक बरग के रूप में इज्जति पावता।

अगर समाज बेवस्था 'पूँजीवादी सामन्ती' भइल त कुल आबादी के दस से पनरह फिसदी पूँजीपति जमीन्दार बरग के हुकुमत होला। व्यापक जन-समुदाय सांच माने में सासक बरग का दाव पेंच के सिकार होत रहेला आ एह तरे बहुमत वाली जनता सासित आ सोसित होले।

भारत में अंगरेज समराजवादियन के सासन रहे आ ओकरा बाद पूँजीपति जमीन्दारन के भइल। ओइसे अपातकाल के कुछ महीनन के छोड़िके आजादी के बाद एह तमाम बरिसन में सासन के सरूप जनतांत्रिके रहल बाकिर ऊ जनतंत्र पूँजीवादी जनतंत्र रहे एह से व्यापक जनसमुदाय के एह जनतंत्र से कवनो नियाव (न्याय) ना भईल

साहित्यकार प समाज-बेवस्था आ सासन-परनाली के असर जरूर परेला एक तरफ सासक बरग के पछ में साहित्य के सिरजन होत आइल बा आ अबिस में होत रही ओहिजे दोसरा तरफ सासक बरग का खिलाफ चलि रहल जन-आन्दोलन के पछधरो साहित्यकार पैदा भइल बाड़न आ अइसने साहित्यकार व्यापक जन-समुदाय का भावना के सही ढंग से जाहिर कइले

www.bhojpurisahityangan.com

बाड़न। मोटामोटी अइसने जन-साहित्य के 'जनवादी-साहित्य' कहल गइल बा।

सही बात ई बा कि ना त पूँजीवादी जनतन्त्र पूरा जनता के अगुआई क सकेला आ ना त जनता के जनवादे पूरा जनता के अगुआई करेला खाली एतने बाति बा कि जहाँ पूँजीवादी जनतन्त्र अल्पमत के अगुआ रहेला उहाँ जनता के जनवाद बहुमत के। अनेक बरगन के बीच बँटल समाज में एकरा छोड़ि के दोसर कवनो राह ना हो सके। बरग बिहीने समाज में ओइसन जनवाद पनपि सकेला जे समुच के जनता के अगुआई करेला। एही तरे पूँजीवादी साहित्य मुट्ठी भर पूँजीपति जमीन्दार बरग के पच्छ में आ जनवादी साहित्य व्यापक जन-समुदाय बाकी सर्वहारा बरग के आम जनता के पच्छ में होला। साहित्य-कारन के एह दूनों में से कवनो एगो राह चुने के परेला। बहुत अइसन साहि-त्यकार जे एह तथ के जानकार नइखन ऊ ओही राह प चलि देलन कवना के परचार सासक बरग पहिले से करवले बा।

कुछ दोसर लोग अपना के बिच-बिचवा साबित करे खातिर एगो तीसरका राह के खोज करेलन जे कि असल में पूँजीवादिए राह के पोसन करेला। नियाव आ अनियाव का बीच लड़ाई में कवनो बिचबिचवा राह ना हो सके। सोसक आ सोसित के बीचे होखे वाला जुझार में बिचबिचवा के माने सोसक के मदत कइल होला। एह से साहित्य में जनवाद के एगो निहचित दिसा बा जे व्यापक जनसमुदाय का भावना के जाहिर करे, पुरान जर्जर पूँजीवादी-सामन्ती बेवस्था के जरि सहित उखारि फेंके आ एकरा तमाम बचल-खुचल चिह्न के खतम कइके नया जनवादी बेवस्था के कायम करे के पच्छपाती बा।

आजु के हालत में पूँजीवादी सामन्ती समाज-बेवस्था कायम बा आ आजु एकरा पच्छधर साहित्यकारन के ढेरो बा जबकि एह लोग के मुकाबिला में जन-वाद साहित्यकारन के बरग बा। आजु के पहिले राजा-महराजा के दरबारी साहित्यकार लोग रहे। सभे जानता कि ऊ दरबारी साहित्य आ चाटुकारिता के साहित्य अब लगभग मरि चुकल बा। दोसरा तरफ जनता का भावना के जाहिर करेवाला साहित्य सास्वत बनि गइल बा।

बीसवीं सदी में गोर्की, प्रेमचन्द, निराला अइसन साहित्यकारन के साहित्य

www.bhojpurisahityangan.com

जनवादी साहित्य में आवेला। आजु सभ केहू एह सँचाई के माने खातिर मजबूर बा कि एह लोग के साहित्य सास्वत बनि गइल बा। आ दरबारी चाटुकार साहित्यकारन के इतिहास का मंच से उखारि फेंकल गइल। आजु जे लोग पूँजीवादी बेवस्था के पोसक बा, आवे वाला दिनन में एहू लोग के ऊहे हाल होई। भले आजु शासक बरग के आसीरवाद से ओह लोग के जे सुविधा मिल जाय आ अकादमी से इनाम मिल जाय भा पद्मभूषण के उपाधि मिल जाय।

●

कहानी

निदान

रजनीकान्त 'राकेश'

जमाना के गिरगिट आपन रंग बदलले जा रहल बा। आपन-अनकर के फिकिर में चले के, जाये के, चहुंपे के हाँका-बाजी लागल बा। केकरा केकर चिन्ता बा? समय का आन्ही में जइसे सभे उड़ल जा रहल बा। आजु जे लखपती बनि गईल बा, ऊ धनवा ओकरा आँखि में कब माड़ा अस छाइ गइल बा। जे उठिना सकल, सम्हरि ना सकल ओ गरीब के के पूछेला? आ ऊहो एह जिनिगी के मरम का बूझता? एगो बोझा जइसे मिलि गईल तो ढो रहल बा। तब बाति रहल एगो निसानी के जे दुनियवा में आबाद रहो।

आसमान से एगो तरेगन जइसे अचके में टूटि के जमीन प आ गईल रहे ओकरा जिनिगी में, बुझाईल जिनिगिया चमकि जाई बाकिर छन भरि अँजोर बइके ऊ अनमोल अलो पत हो गईल रहे।

चाहे बाला तरसते रहि जालन बाकिर गोदो ना भरे आ ना चाहे वालन के त एगो फउजे खड़ा हो जाले। महँगू आ सुखिया मिलि के ना जाने कतना मनवती कइलनस बाकिर भगवान एकहू ना सुनलन। फूल अस लइकन के देखि के मन तरसे लागे। मन करे गोद में उठा लेउ पुचकारि लेउ, चूमि लेउ बाकिर जब अब आपन-पराय के खबरि होखे त दिल थाम्हि के रहि जाय। ना जाने कतना ओझा-गुनी बोलवलनस, कतना पूजा-पाठ करवलनस बाकिर विधना त ना जाने कवना पुरुब जनम के बैर सधले रहे! जाने कतना टूअर लइकन के ले-आ-लेआ पोसलस बाकिर एकहू ना बचलनस।

www.bhojpurisahityangan.com

बाकिर कहले कहल जाउ? भागियो कबो कबो आदमी के खूब मजाक उड़ावेला। अब जिनिगी ढरे लागल त सुखिया के एगो लइका भईल -रेगन अस चमकत, फूल अस गमकत। अब ऊ हमेसा ओकरा के छाती से लगवले रहे, आँखिन में बइसवले रहे, ओकरे में भुलाईलि रहे, भुललि रहे।

नेह-छोह के अमृत में पुरहर सिचाईल आ पोसाईल हरियर लत्तर नियर, समय के रफ्तार के संगे ऊ लइको बढ़ि के बड़हन हो गईल। बड़ा होनहार रहे ऊ। इसकूल जात लइकन के देखि के ओकरो इसकूले जाये के मन भइल। ऊ माई से कहलस- 'माई, हमरो के इसलेटि आनि देना हमहूँ पढ़े जाईबि।' सुखिया आनि दिहलसि।

रोज भोरे सुखिया लइका के जगा के फर-फरांकित कराके नहा-धोवा लेवे आ तब खायेक का फिकिर में रसोई घर का ओरि बढ़े। कुछ दिन चढ़ला प दस बजे के करीब जे सूखल-पाखल बनि पावे से लइका के खिया देबे। गाँव से बहरी थोरकी दूर प इसकूल रहे। महँगू लइका के अपना कान्ह प बइठा के रोज इसकूल में चहुँपा आवे।

× × ×

सुखिया के बेटा जगदीस ओसो इसकूल में सातवीं किलास के पढ़निहार रहे. होनहार, तेजबुद्धिवाला सुसील आ इसकूल के नाक रहे आजु इसकूल के निरीक्षण होखे वाला रहे। निरीक्षक साहेब अनेकन सवाल कइलन ऊ सभके सही-सही जबाब दिहलस। निरीक्षक साहेब ओकरा बाद बहुत खुस भइलन।

ओही दिन से जगदीस के समूचा फीस त माफ होइये गइल सगही सगे कापी-किताब कीने खातिर हर महीने वजीफो मिले लागल।

जहाँ बदरिन के रंग बदलत, उमड़ि-घुमड़ि के आवत आ बरिस जात सभे देखल, आन्ही-तूफान में गिरत-भहरात फड़-हल आ उड़ियात मड़ई-पलानि के सभे देखल ओहिजे जाड़ा के बाद गरमी, गरमी के बाद बरसात आ बरसात के बाद फेर जाड़ा के आवत सभे देखल बाकिर समय आदमी के अपना पीछा छोड़ि के अपना रफ्तार में कतना तेजी से आ कतना आगे बढ़ि गईल ई केहू ना देखल। साठि बरिस के बुढ़वा महगू आजु मरन-सेज प परल बा। बरीसन के दमा के मारल आ एने त एक-दू महीना से बेतरह तबाह बा। आजु-काल्हु न

www.bhojpurisahityangan.com

खोंखते-खोंखत एने भोर होता फेरु खोंखते-खोंखत कोने साँझि। राति-दिन रोज-रोज के ईहे रोजनामचा बा। एक हप्ता से जमीन प परल-परल छपिटा रहल बा, छाती के दरद में हाँफि रहल बा, कहँरि रहल बा। ओकर एकलउत जगदीस ओकरा लगिये बइठल बा। सुखिया ओकरा सेवा में लागल बिया। अबहिने त जगदीस दवाई ले आवे गईल रहल हा। पहिले पइसा ना रहल हा, करीत का? दिनेस बाबू से दस रुपिया करज लेला तब दवाई आइल हा।

महगू अब साइद आराम से सूतल रहे। भाँय, बाकिर ई का? ऊ त बेहोस परल रहे। मुँह प पानी उछरुगि के ओकरा के होस में ले आवल गईल। बहुत जोर-जोर से हाँफत रहे ओह घरी ऊ बाकिर बाद में फेरु बहुत धीमा हो गईल। लोग बूझल कि दमा प दवाई असर कइलेबा। दमा अब ठीक हो जाई।

दमा चलि गईल जरुर बाकिर ओकरा संगहीं महँगू के प्रान पखेरुओ। सेठ-साहू सभ के एक बेरि फेरु मोका मिलल। पंडित जी कहलन—'सुखिया का देखतारिस? महँगू त जिनिगी भरि कुछु दान-पून नाहिये कइलस, अबो गऊ-दान करा दे कि अइसहीं छोड़ि देबे?' हँ हँ, अरे पइसा के फिकिर में का परल बाड़िस? जब जतना मन करे हमरे से ले ले। जब मालिक के दीहल खेत-बारी लगे बड़ले बा त चिंता कवन बात के धन में धन कठवति, जेहू पाँच-दस कठा बाँचल रहे, सराध में सेठ अपना नावे बन्हकी रखवा के आपन उल्लू सीधा कइलन।

दिन भर केहू के घरे कुटवनी-पिसवनी कइला के बाद सुखिया के अगर कुछु मिल जाय त पेट के दाना भेंटाय। कबो-कबो त दूनो जून चुल्हा ठण्डे रहि जाय।

आजु जगदीस बी० ए० क चुकल बा आ नोकरी के खोजो में बा। आजु-काल्हु कनाज लेखा नोकरियो के त अकाले परल बा। आखिर करे त का? पटना में साइद कवनो बहाली होखे वाली बिया। लोग जा रहल बा खुसी के साथ घउरि के, जइसे कुछु लूटहीं जात होखे लोग। एने त खाये के दूगो दाना नइखे भेंटात भाड़ा के पइसा कहाँ से मिली? अपना टुटही खाटी पर परल-परल जगदीस सोचि रहल बा। अपना किस्मत प लोर बहा रहल बा। बड़ा चिरउरी

www.bhojpurisahityangan.com

कहला प साईद दिनेस बाबू से पचीस रुपिया करज मिललह। अब ऊ हो पटना जा रहल बा आपन भागि अजमावे।

नीचे से ऊपर तक तिमँजिला सरकारी बगला लोगन से खचाखच भरल बा। ईहे ना बाहर के मैदानो नखे-नखे भरल बा। कहाँ का हो रहल बा, कुछऊ पता नइखे चलत। चारु ओरि भाग-दौड़ मचल बा। केहू से पुछला प केहू कुछ नइखे बोलत। सभे आवेस में बा केहू खुशी के केहू दुख के।

एही भीड़ के चीरि के कवनो आदमी एगो खिरकी प चढ़ुंपे के कोसिस क रहल बा। साईद ई जगदीस ह। ऊ आपन समुचके कागज-पतर बड़ा बाबू का ओरि बढ़ा देलस। बड़ा बाबू कहलन—'अरे के ह भाई! बारह बजे जा रहल बा अब दू बजे के बाद अइह' जगदीस कहलस—'श्रीमान्! अबहीं त बारह बजे में पनरह मिनट देर बा। बड़ा बाबू सोचलन कि कवनो सोर्सी वाला आदमी बुझाता। पुछलन—'के ह आदमी हउव?' जगदीस कुछऊ ना बोलल त फेरु पुछलन—'इहाँ लोहर केहू नोकरी करेला का? तब जगदीस कहलस—'जी ना' 'कवन जाति हव?' 'कोइरी हईं।' 'त फेरू कुछु लेइयो आईल बा कि अइसहीं हाथ दुमावत चलि अइल ह?' जगदीस भकुआईल उनुकर मुँह ताकत रहे। बड़ा बाबू बूझि गइलन कि बाबू साहेब खलिहे बाड़न। एक हाथ के पाँचो अँगुरी देखा के ऊ कहलन—'ठीक बा जा अगिला बेर एतना (माने कि पाँच सइ) लेके अइह त आराम से हो जाई।' अतने में जगदीस के बगल में खड़ा एगो लइका फटाक् से अपना दूनो हाथ के दसो अँगुरी देखावत कहलस—'महाशय, हमरा से रउआ बलुक ऐतना ले लीहीं, बाकिर हमार क दीहीं।' जगदीस से ई तमासा देखल ना गईल। ऊ ओहिजा से तुरन्ते खसकि गईल।

ऊ ओह नरक में ठहरि ना सकल। ओकरा अइसन बुझाईल जइसे हजार गो निठुर हाथ ओकर गरदन दबावे खातिर बढ़ल आ रहल बा ऊ अपना घरे लवटि आईल। देह के रग-रग थकान से टूटत रहे। दिमाग चिंता में चूर रहे। ऊ सोचत रहे—दोसरा लईकन से, का हम इम्तिहान में कम नमर ले आईल रहीं? — ना, त फेरु? हम उनुका जाति के ना रहीं एही से नू? आ पैरवी में बड़ा बाबू के पगली भरे खातिर हमरा लगे रुपयन के गड्डी ना रहे एहो से नू? ओह! कइसन अभागा बानी हम? अइसो कहलीं त करज के भारा प!

www.bhojpurisahityangan.com

दू दिन से ठीक से खइलस ना। परविग्यावे प काम चरल। ना देंह के होस रहे ना वह्तर के? घरे आईल आ आवते खटिया प गिरल त दू दिन बाद होस आइल। बोखार ओर प रहे। डक्टर खाये के मना कइलस। बेचारी अभागिनि सुखिया के लगे पइसो त ना रहे कि दवा-दारू कीन के ले आईति। डॉक्टर अपना ओर से थोरे दवाई देले रहे। फयदो भइल बाकिर थोरहीं घरी खातिर। सुखिया आपन दुखड़ा सुनावे खातिर दिनेश बाबू के लगे गईलि। दिनेश बाबू कहे लगलन— 'त फेरु आ गइलिस?' पहिले के ले पइसा ले ले बाड़िस से दिहलिस ना! अ. फेर अबकु लेबे पहुंचि अइलिस? पइसा का एहिजा घूरा-गनउरा फेंकाईल बा कि बटोरि के दे दिआव? सुखिया कहलसि— 'मालिक, तीन दिन से बबुआ बेमार बा, ना कुछु खइलस, ना पियलस नू दवाइये -?' 'त का सभके हम ठोका ले ले फिरतानी, कि पइसा हमरा के काटता जे घूरा गनउरा फेंकत फिरीं? जा ए घरी हाथ खालीबा।' सुखिया सोचे लागलि कि अब केकरा लगे जाईं। बिसेसर बाबू पुरुब से आईल बाड़न। कलकत्ता में नोकरी करेलन, हो सकेला उनुका कुछ दया आ जाउ। उनको से आपन दुखड़ा सुनवलस। बिसेसर बाबू सुनितन कहीं, सुनावहीं लगलन—'का कहीं सुखिया! बेटा क बियाह करेक बा, बेटी क बियाह करेक बा, हई करेक बा, हऊ करेके बा। एने पइसा के ताक में त हमहीं रहनी हँ कि केहू से कुछु अउर पइसा के जोगाड़ हो जाईत त केहू तरे काम निकल जईत।' एकरा से आगे कान ना सुन सकल अउरी जादे सूने खातिर गोड़ दोसरो डेग आगे ना बढ़ल। सुखिया घरे लवटि आईलि।

जगदीश आजु पाँच-छव दिन से खटिया धइले बा। परल-परल बोखार में बर-बरात रहता, छपिटात रहता, कहँरत रहता। कबो-कबो त बोखार का बढ़ि गइला से बेहोस हो जाता आ ओही में बगात रहता—'नोकरी जाति··· कुछ लेइयो अईल बाड़ कि अईसहीं" ,ओह! आ फेर एगो अनजान गहिरा दरद में डूबि जाता। चेहरा पीयर हो गइल आंखि कोटर में धँसि गइली सँ। हड़री स फ लउके लागल। देहि दिन प दिन गले लागलि। देह में नया-नया रोग पइसे लगल। आजु भोरहीं से ओकर हालति बहुत खराब बा। सुखिया लगिये बइठलि बिय ऊ पागल अस बोलत जा रहल बा—'आइबि जरुर आइबि,

www.bhojpurisahityangan.com

रुपया लेइये के आइबि चाहे जइसे होखे। पाकिट काटबि, हथ लुपुक बनब. डकइती करब, भले जेल जाइबि बेंत के मार सहबि बाकिर लेइये के आइबि। तूत पांचे सइ कहत रह नू? हम पांच हजार लेके आइबि आ पूरा बाजागाला के साथ आइबि तोहर खातिरदारी करे। आंय, केहू सूनत त नइखे? देखिह फेरु केहू पाँच के जगे दस हजार देके एहिजो हमरा के ठगे मत पावे। ठहर हम अबहीं अइलीं ...। चेहरा खीस से लाल बा। मुट्ठी कसा के कड़ा हो गईल बाड़ी सँ। देंह कांवू में नइखे। पूरा ताकत बटारि के लरखरात ऊ उठे के कोसिस क रहल बा।

अतने में एगो जुलुस नारा लगावत सामने का गली से गुजरल। ऊ देखलस ओह जुलुस में मेहनतकस मजदूर, गरीब किसान आ ओकरे लेखा सएकड़न बेकार नवजवान नारा लगावत जात रहन—रोजी द! रोटी द! नाहीं त फेर बोटा द! इनकलाब जिन्दाबाद! जिन्दाबाद! जिन्दाबाद!

एकाएक ओकरा भीतर से उफान आईल जइसे दस हाथी के बल होखे। बेतहासा आन्ही अस उबियात ऊ जुलुस में सामिल हो गईल। आगे चलि के जुलुस एगो मैदान में सभा के रूप में बदलि गइल।

फटही कमरी ओढ़ले हाथ में लाल झण्डा लिहले एगो नवजवान मंच प आइल आ कहे लागल—भाई लोग! आजु जे हमनी बेकार, फटेहाल आ दानादानी के मुंहताज बानी एकरा खातिर जिम्मेवार के बा रउआ बढ़ियाँ से जानतानी। एकरा खातिर पूरा-पूरी दोसी बिया ई पूंजीवादी सामन्ती बेवस्था जवना में सांझेदार बिया (कोढ़ में खाज लेखा) ओही सरल गलल बेवस्था वाली ई निकम्मी सरकार। एकरा जोर जुलम के खतम करे खातिर एह बेवस्था के जरि सहित उखारि फेंके के परी, जेकरा खातिर एक जूट होके हमनी के एगो लामा अभियान में कूद करे के बा।

'इन्किलाब' के नारा फेरु आकास के चीरे लागल। लोग देखल, मंच प भासन देवे वाला ई आदमी जगदीस रहल जे करा आगे-पीछे ओइसने सएकड़न जगदीस हाथ में लाल पताका फहरावत रहन।

●

www.bhojpurisahityangan.com

फिलिस्तीनी कहानी

का भइल ?

★ हुसैन यबू अल-नाजा

ऊ बाढ़ लेखा भीतर ढूकल, ऊ ओकरा के भय से देखति रहे। ओकरा एक तरह के भान होत रहे कि कुछ असगुन होखे के बा। चउराहा प गोली चलति रहे। ओकर सांस ऊपर के ऊपर नीचे के नीचे रहिगइल।

ऊ ओकरा लगे आके खोस में बमकल—ऊ कहाँ गईल ?

—के ?

—बागी !

—बागी ? ऊ बेतरह काँपति रहे।

—तू ओकरा के लुकवले बाड़ू—ऊ बुद-बुदइलस।

—ना।

—तब ऊ कहाँ गइल ?

—हम नइखीं जानत।

ऊ ओकरा आँखिन में आँखि डालि के निहारे लागल। ऊ फरस का ओरि देखे लागलि।

—का तू डेराइल बाड़ू ? ऊ पूछलस।

—केकरा से ?

—बागी से।

—ना।

—तब तू ईकाहे नइखू बतावत कि ऊ कहाँ गइल ?

—हम केहु के नइखीं देखले।

—हम तोहरा के ओकरा से बचाइब। ऊ ओकरा के बढ़ावा देवे के खियाल से तकलस आ बोलल—ओह सभ से।

—हम केहू के ना देखलीं।

ऊ कान्ह धके ओकरा के घसेटलस आ जोर से बोलल-तू झूठ बोलतबाड़ू।

— हम किरिया खातबानी की हम झूठ ना कहलीं हँ।

www.bhojpurisahityangan.com

ऊ ओकरा के निहारत रहल आ बोलल--हम ओकरा के एनिये आवत देखलीं हँ।

ओकरा ओर देखत ओकरा परेसानी होत रहे। आपन माथ नवाके भुन-भुनइलस--अगर तूँ हमार मजाक करबू त घाटा में नारहबू।

—हम किरिया खातानी कि केहू के ना देखलीं हँ।

—तू केहू के ना देखलू त ई का।

ओकरा चेहरा पर पड़ल चमेटा के झन्नात आवाज कोठरी में फईल गइल। ओकर पीठ देवाल से जाके टकराईल। तेज कँहरल ओकरा के भीतर ले तड़पा देले रहे।

—हम तोहरा के झूठ ना बोले खातिर चेतावत बानी, आ फेर धमकावत ऊ बोलल। ऊ आपन हाथ अपना गरदन पर फेरत रहे। ओकर धड़कन बहुत तेज होगइल रहे आ ऊ बेतरह काँपति रहे।

—हम केहू के ना देखलीं।

--हम किरिया खातानी कि हम केहू के ना देखलीं

ऊ ओकरा के कोठरी में धकिया दिहलस। अपने लूगा में ओकर गोड़ लपेटा गइला के कारन ऊ कोठरी में लोंढ़ात चलि गइलि। ऊ फरस के ओर खिंचल सून में तिकवें लागलि। गहिर बिसाद से ऊ घेराइल जाति रहे। ओकर इच्छा तुरते मरि जाएके होत रहे। ओकरा गालन प सुसुम लोर ढरकि आइल रहे।

ऊ दरवाजा के पीछा तिकवलस। कुछ ना रहे। ऊ बेआकुल होके बोलल—खड़ा हो जा। ऊ चुप-चाप बिछवना से अलग होगइलि। बिछावना के उलटि के ऊ पाछा देखलसि। जब ओकरा पूरा संतोस हो गइल कि ओहिजा केहू नइखे लुकाइल त रिसारा कइलस कि बिछवना के सही जगह पर फेर लगा देव। बिना कवनों हिच-किच के ई उहे कइलसि जे ऊ चाहत रहे।

-- अकेले बाड़ू ? ऊ पूछलसि।

—हँ!

ऊ बाझ लेखा ओकरा प झपटल। ओकर बाँहि धके झक झोरलस—तब तूँ हमरा के बिलकुल अनाड़िये बाड़ू भात ?

www.bhojpurisahityangan.com

—हम किरिया खातानी

—तूँ केकरा साथे रहेलू ? ऊ पुछलस। ऊ चूप रहलि। ऊ का-जवाब दे सकति रहे।

थाकिर ऊ पूछत रहे—बियाह होगइल ? ऊ हक-बकाइलि रहिगइलि।

—तोहार भतार कहाँ बा ? ऊ पूछलस।

—हमरा ना मालूम।

—साँचे ?

—हमरा का पता ?

—कइसे हो सकेला कि तू नइखू जानत ?

—हम ओकें देखले तक नइखीं।

—कब से ?

—दू महीनन से।

—एकर मतलब बा जूझार से दू हप्ता पहिले से ?

—लगभग ईहे।

ऊ ठठा के बोलल—का तू जानत बाड़ू कि एकर मतलब का बा ?

—ना...

—एकर मतलब बा कि ऊ सिपाही रहे।

ऊ बमकि के कहलसि—ना !

—आ जुझार के बाद बागी बन गइल।

—ना।

ऊ फेर ओकरा के निहारे लागल। ऊ अपना दिल पर एगो बोझा महसूस करति रहे। ओकरा चेहरा पर घबड़इला के चिन्ह साफ रहे। ओकरा अपना मरद के ऊ मुसकान इयाद रहे, ऊ साँझ जब ऊ जात रहे। जाये से पहिले ऊ ओकरा के चूमि के कहले रहे कि ऊ आपन खियाल राखी। जब ऊ जात रहे, ऊ ओकरा के देखति रहलि।

—हमरा-के खूम-खराबी करे खातिर लाचार मत कर।

—हम किरिया खातानी कि हमरा जे कुछ मालूम बा तोहरा के बता चुकलीं।

www.bhojpurisahityangan.com

—ऊ कहीं बा ?

—हमरा पता नइखे।

—ऊ बागो ह ?

—ना।

—तोहरा कइसे मालूम कि ऊ अइसन नइखे ?

× × ×

ऊ फरस का ओरि देखे लागलि। लड़ई खतम भइला के बाद बहुत लोग लवटि आइल रहे बाकिर ऊ ना आइल। ओकरा भरोसा रहल कि ईलोग आगइल त ऊहो जरुर आई। थोरिके दिन बाद ओकर पड़ोसिन ओकरा से मिले आइलि। पड़ोसिन आँखि मिलावे में हिचकति रहे। एह से ऊ पूछलसि—उम अल आबिद, का ममिला बा ?

--भगवान तोहरा के ताकत आ भरोसा देसु! पड़ोसिन दुखी होके कहलसि।

—का ? ऊ घबड़ा के चिचिआइलि। ऊ पागल लेखा पड़ोसिन के झोरति रहे--बोल ! अब्द अलफतह के कुछो हो त ना गइल ?

—भगवान हमनी के रछेया करसु, ऊ लड़ाई के मैदान में बहादुर के मउअत मरलन, ऊ मेहरारु धिरिजा देति कहलसि।

—अब्द अलफतह गुजरि गइलन ?

भरभरात आवाज में ऊ पड़ोसिन बोललि—बाकिर भगवान तोहरा के ना बिसरिहें !

ऊ बेहोस अस हो गइलि। मउअत ! मउअत ! भयानक चीख हवा में गूँजल रहे। मउअत ! उरुआ आ कउआ के काँव-काँव से बिसाद के अवंज आवत रहे। मउअत !

—ओकरा तोहरा बिना चएन ना रहे, एह से वापस आइल रहे, ऊ मेहना मरलसि।

जब ऊ कुछो ना बोललि त ऊ बोलल जारी रखलस—बाकिर ऊ सही मोका ना चुनलसि।

www.bhojpurisahityangan.com

ऊ अमहम में परि के ओकरा के देखलसि।

—अच्छा, ऊ अपना घरे आइल रहे ?

ऊ अपना मुड़ी के हिलवलसि—ना !

—आ तूँ ओकरा के लुकवले बाड़ू ?

—न'।

—हम तोहरा से कबुलवावल जानतब नी।

—तू जे कइल चाहऽ, कर सकेल ! ऊ गरिजलि।

ओकर हाँथ ओकरा माँथ पर पड़ल आउर ऊ फरस पर गिर गइलि। ऊ बेहोसी में डूबि गइलि। हमरा मुँह में कोइलर के बहार वा आ डामर खिचला। करिया कवआ मेंड़राइल बंद कर ऽ। दुष्ट उल्आ चूप हो जा। ऊ बिना अवाज के कँहरति रहें। साँस अन्दर बाहर करे में ऊ कहू तरे दम लगाके कहलसि—अततांई ! तोहरो दिन आई !

ओकरा के खोंचत ऊ बोलल—ठाड़ा हो जा।

रोके के कोसिस कइलसि, बाकि ओकर हाँथ काफी मजबूत रहे। एकरा पहाड़ अस लउकल। ऊ एकरा के दूरो धकिया दिहलस—बाहर निकल।

—हमरा के मारिद ! विसवास के साथ कहलसि।

हतेया कइल पाप ह, तनी नरमी से ऊ बोलल, तोहार मरद कहाँ बा ?

—हम कुछ ना कहब।

ऊ लात मारिके ओकरा के आगे ठेकेल दिहलस।

—तब तू अपना घर में लवटि चलेलू।

ऊ अपना घर के ओरि घुमलि, तबे ऊ धउरे शुरू क दिहलसि।

जइसहीं घर के दुआरो लगे पहुँचलि, ऊ गोली मारि दिहलस। एगो सिपाही भागत आइल—का भइल ?

—कुछो ना।

—हम गोली चले के आवाज सुनले नी हाँ।

—हम बागी के मारि देले बानी, ऊ बात खतम करत कहलस।

( )

—अनुवाद : मृत्युंजय

www.bhojpurisahityangan.com

लघुकथा

उदास चिरईं

कन्हैयालाल बोहरा 'मधुवन'

एगो चिरईं दिन भरि मेहनत कइ के दू गो दाना। अपना खोंता में ले जाके रखलसि। थोरिके देर बाद एगो बाझ आइल आ बोलल -एगो दाना हमरा के दे। चिरईं डरे ओकरा के एगो दाना दे देलस। बाझ के पीठ फेरते सुग्गा आइल—काल्हु हम एगो दाना उधार देइले रहीं। वापस करे के समझौता प। हमरा लगे एकही बाँचल बा—कहत चिरईं दोसरका दाना ओकरा के दे दिहलस।

अब मुआइल चिरईं उदास बइठलि रहे कि अतने में एगो साँप आइल- चिरईं उदास काहें बाड़ ? चिरईं पूरा बाति बतवलसि। साँप बोलल—तू हमरा पेट में घर बना ल। हम त हवा खा के जी सकीला।

पात्र-परिचय :— चिरईं मेहनतकश किसान।. दाना—उपज। बाझ-पूँजीपति। सुग्गा—बनिया [सेठ]। साँप— बेबसी, लाचारी।

—अनुवाद—मृत्युंजय

पाठक लोगन से अरज बा कि एह पत्रिका के बारे में आपन राय-विचार आ प्रतिक्रिया भेजसु।

भोजपुरी हरमुठाह, मेहनतकश, साहसी आ जुझारु लोगन के बोली ह — जं जं ग्रियर्सन

भोजपुरी के किताब आ पत्रिका खरीद के पढ़ीं आ पढ़ाईं।

'डहर' में विज्ञापन देके, आपन आमदनी बढ़ाईं।

जय भोजपुरी ! जय हिन्दी !!

www.bhojpurisahityangan.com

करज़

अहमद नदीम कासमी

रहमान जब दफतर से घरे आइल त बारह गो आँखि ओकरा प जमि गइली सँ। फेर एह आँखिन में से नन्ही-मुन्नी लाल-लाल जीभ निकलि अइली सँ आ ऊ हल्ला करे लगली सँ कहाँ बा? कहाँ बा? कहाँ बा?

—बा भाई! रहमान बेचएनी से मुसुका के कहलस-ले आइल बानी। ऊ जेबी में से एगो रुपिया निकालि के मेहरि के थम्हा दिहलसि। पाँचो बच्चन के जइसे बटन दबा गइल आ ऊ बछरि के अपना महतारी के लगे आ के गिरलनस—माई... माई माई! ऊ फरमाइस सुरु क दिहलनस।

रहमान भीतर कपड़ा बदले चलि गइल। दू बरिस से ओकरा लगे खाकी रंग के ईहे एगो पतलून रहे, जेकरा के तहिया के ऊ तकिया के नीचे राखि देइ आ रात भरि ओकर कपार पतलून प इस्तरी कइल करे। पैंजामा पहिन के बहरी आइल, त महतारी-बच्चन के कनफरेंस जारी रहे। ऊ एह कनफरेंस में सामिल होखे खातिर खटिया प बइठि गइल आ बोलल—हहे आपन साकिर आजुओ कामे आइल। अपना घर खातिर कतहीं से दू गो रुपिया माँगि ले आइल रहे। हम कहलीं—एगो हमरा के दे द। शेर का बच्चा के लिलार प एकहू सिकुरन ना परल। चटाक से एगो रुपिया हमरा के धरा दिहलस। एह महीना में ओकर कतना रुपिया हो गइल?

ऊ ई सवाल अपने-आप से पुछले रहे, बाकिर जबाब जइसे बाहर से आइल। केवाड़ी खट-खटाइल। रहमान बहरी गइल आ देरी ले लउटल ना, त मेहरि गोहरवलसि - ए जी, हम कहतानी, कवनो लमहर बाति होखे, त हम हटि जातानी रउआ सभ एनिए भीतर आ जाईं।

रहमान का ओर से कवनो जबाब ना मिलल, त ऊ चिहाइलि अवंज़ मचावत लइकन के ऊ डाँटि दिहलसि आ वहँरसी वाला दुआरी लगे आ के बाति करे खातिर उठलि, त रहमान भीतर आ गइल। ओकर चेहरा लाल हो गइल रहे आ हाथ पीयर परि गइल रहे —आजु दुनिया से जा रहल बानी? ओकर आवाजो बदलल रहे। बारह आना ना भइल कि बारह हजार रुपिया हो गइल। फेर ऊ मेहरि का ओरि हाथ बढ़वलस—ले आव ऊ रुपिया।

मेहरि जइसे सभ समुझि गइलि रहे। ऊ मुठी खोलि दिहलसि। रहमान मोराइल नोट के सोझा कइलस। एक छन ओकरा के निहरलस। फेर बहरी चलि गइल।

www.bhojpurisahityangan.com

फेर तुरन्ते लवटल। मेहरि के हाथ पर पच्चीस पइसा राखि के धब से खटिया पर बइठि गइल—ना जाने कवन मनहूँस घरी रहे कि डाक्टर हमरा के दूधे पीये के हिदाइत कइलस। ई डाक्टरो लोग हिदाइत देवे में बड़ा तेज होला। ना सोचे कि कहीं' मरीज के दूध किने खातिर आपन खून त ना बेंचे के परी!

—उहे आइल होई ग्वाला! मेहरि कहलसि। अब ओकरा आवाज बदलल रहे।

—हँ, उहे रहे, रहमान बोलल—कहत रहे बेटी बेमार बिया टीका लगावे के बा। टीका लगवाई बारह आना देवे के बा।

मेहरि पूछलसि—त का पूरा मोहल्ला में ऊ खाली हमरे इहाँ दूध उधार देवल हऽ?

रहमान बोलल--हम इहे कहनी, त ऊ बोलल--उधार त देला बाकिर लोग परे-तीसरे दिन पइसा चहुँपा जाला, तोहरा लेखा चउदह-चउदह, पनरह-पनरह दिन तक राह ना अगोरवावे।

मेहरि अचम्हों में रहि गइलि--चउदह, पनरह दिन। अरे; ईकुल··· कतना दिन भइल? अतवार के रउआ बोखार आइल रहे आ डाक्टर सिरिफ दूध ना पावरोटी खाये के कहले रहे। आजु का ह बुध हऽ नू? त अतवारे-अतवारे आठ, सोमार नव, मंगर दस आ आज बुध एगारह······ कुल्हि एगारहे दिन त भइल।

रहमान बोलल--हमहूँ इहे कहलीं, बाकिर ऊ बोलल--देवे के बा त द आ कहऽ त बकसि दीं! तब हमरा ताब आगइल। हम कहलीं--चउधुरी हम कवनों भीखमगा थोड़े हईं! ऊ बोलल--भीखमगनों के जेबि में बारह आना त निकलिये आई। फेर हम तोहरा से रुपिया लेके ओकरा मुँह पर दे मरलीं। अब चारि आना के का मगवाईं कि भगवान के ईसब परानी के पेट भरि सको। ऊ लगिये छितराइल लइकन का ओरि देखलसि आ फेर मेहरि के बाँह धइ के कोठरी में चलि गइल।

मरद-मेहरारू के ई कनफरेंस ढेर लमहर ना चलल। तय भइल की चारि आना के दही मगवा लियाय। रोटी तंदुरवाला से उधार आजाई। बच्चा दही से खाहिहें स। अपने पियाज से गुजारा कइल जाई। मेहरि रहमान के हाथ में अलमुनिया के छोटहने बाल्टी देहलसि आ ऊ पचीस पइसा मुट्ठी में दबा के दही लेवे चलि दिहलस।

सवा दू बजत रहे। मकान के देवाल आ जमीन तपि के गरमी का तेजी के दुगुना क देले हे।

—

दूध-दही वाला खाली कुँड़ा बाहर से उठा के भीतर राखत रहे। रहमान के देखि के बोलल— दही त खतम हो गइल बाऊ रहमान। आजु काल्हु दही पर त एह गरमी में लोग टूटि परेला। दसे एगारह बजे सभ साफ हो जाला, आ एह बेरा... का बजत होई एह बेरा ? रहमान का लगे घड़ी ना रहे। ऊ लगिये से गुजरत एगो आदमी से समय पूछलस त ऊ अपना बाँया हाथ के एक झटका के साथ फइला के घड़ी के आस्तिन के नीचे से निकललस। फेर उलुटा हाँथ के अपना दाढ़ी के लगे लेआइल आ रहमान के समय अइसे बतवलस जइसे ओकरा हाथ पर पइसा राखत होखे— सवा दू !

—सवा दू कवनों बेरा ह दही के, बाऊ रहमान ! दूध-दही वाला कुँड़ा के एगो अउर मिनार उठा के दोकान में दाखिल हो गइल। रहमान सोचलस चल आगे जाके देखतानी ! अइसनों का होई कि अब पूरा मोहाल्ला से दही गायब हो जाई !

दूगो दोसरा दोकान से हतास होके ऊ बड़की सँड़क पर आ गइल। सँड़क से निकलत एगो गली में दूध-दही वाला बीवा बइठत रहे। दिन भर ओकरा इहाँ लस्सी पीये ओला के हुजुम लागल रहत रहे। एक बेर दफतर से छुट्टा के बाद साकिर रहमान के ओहिजे ले जा के लस्सी पियवले रहे।

गली उहाँ से दूर रहे बहुत लम्बा रहे आ बीवा के दोकान ओकरी आखिरी छोर पर रहे। रहमान झटकि के चले लागल बाकिर अबहीं कुछुवे डेग गइल होई कि सामने एगो जुलुस आवत लउकल।—केकर जुलुस ह भाई ? ऊ कहू से पुछलसि। जबाब मिलल— मजदूरन के लागता। नू ट्रक बा, नू कार, नू स्कूटर। बस आदमिये-आदमी बा। अइसन जुलुस त मजदूरने के होला। अभी ओकरा लमहर फसिला तय कइके गली में मूड़े के रहे एहसे ऊ आवत जुलुस का ओरि बढ़त चलि गइल। ओकरा के फरके से बीवा वाली गली का मोड़ प लउके लागल रहे; बाकिर, अब ओकरा आ गली के बीच जुलुस रोकावट हो गइल रहे। गली के सोझा पहुँच के ऊ जुलुस के गुजरि जाए के इन्तजार करे लागल। ताकि सँड़क पार कके गली में दाखिल होसके। बाकिर जुलुस रहे कि खतम होखहीं में ना आवत रहे। सँड़क इहाँ से ओह पार तक भरल रहे। ऊ एगो फेंड़ के छाँह में खाड़ हो गइल. जहाँ पहिले से

www.bhojpurisahityangan.com

वीसन तामसबीन जमा रहन।

एगो झंडी प लिखल नारा पढ़ि के रहमान चिहाइल— 'हमनो के ओह दिन के इन्तजार बा, जब हमनो के केहू से करज ना लेवे के परी।'

बाल्टी में से पइसा निकालि के ऊ जेबि में रखि लिहलस आ आगे बढ़ि के जुलुस के साथ चलेवाला एगो नव जवान से पूछलस— काहें भाई, ई जुलुस......

बाकिर ऊ आपन सवाल पूरा ना क सकल। नव जवान घुमि के ओकरा ओरि देखलस, त ऊ हू बहू रहे रहे। ओकरा कुछ अइसन लागल जइसे ऊ दरपन के सामने चलत होखे।

—का बात बा? नव जवान पुछलस। बाकिर ऊ आवाज आपन ना चिन्ह सकल।

—तोहार नाँव रहमान त ना ह? रहमान पुछलस। नव जवान भकुआ के ओकरा ओरि निहारे लागल।

—तोहरा जेबि में सिरिफ पचीसे पइसा त नइखे? नव जवान मुसुकाइल।

—तूँ अपना लइकन खातिर बीबा के दोकान से दही लेवे त नइख जात?

नव जवान हंसल— हमनो सभे रहमान हँई। हम सभनी के जेबि में खाली पचीस-पचीस पइसा बा। हमनी का अपना लइकन खातिर दही लेवे जा रहल बानी जा।

रहमान आगे-पीछे, दायें-बांयें देखलसि त सभ ओरि जइसे उहे चलत रहे। ओकरा साथ ओला रहमान बोलल— चिहात काहें बाड़? हमनी क एक दोसरा के तसवीर बानी जा। जब कटोरा क चकोले त बिल्कुल एक लेखा होखीला। तूँ जुलुस में से निकलि के एक ओरि खड़ा होजा त तोहरा सभ अनचिन्हारे लागी।

—बाकिर हम जुलुस में से ना निकलब। रहमान कहलस। हमरा त तोहनिये लोग अस ओह दिन के इन्तजारी बा जब हमनी के केहू से करज ना लेवे के पड़ी। बाकिर हमनो का जात कहाँ बानी?

—दूध-दही वाला बीबा का लगे। ओकर साथी मुसुका के बोलल। रहमान चिहाके कहलसि - बाकिर बीबा के दोकान त पाछहीं छुटि गइल।

www.bhojpurisahityangan.com

—आगहूँ बीबा के दोकान बा, साथी ओकरा के बतवलसि। इहाँ सगरो बीबा के दोकान बा। जइसे हमनी के सभ केहू रहमान बानी जा, ओइसहीं सभ दोकान बीबा के दोकान ह।

× × ×

एकाएक जुलुस थम गइल आ ऊ सभा के रूप धरे लागल। ई एगो बड़हन चउराहा रहे जवना में जुलुस के हजारन आदमी एगो घेरा में बइठि गइल। चऊक के बीच में टराफिक के सिपाही के खड़ा होखे खातिर सीमेंट के जे बड़ मोटहन सील राखल रहे, ओपर एगो आदमी खड़ा हो गइल आ रहमान के अइसन लागल जइसे सीमेंट के सील प ऊ खुदे खड़ा हो गइल होखे। फेर ऊ आदमी भासन देवे लागल। ई जुलुस एगो मील में ओह छँटनी क खिलाफ निकालल रहे, जवन एक सब मजदूरन के बेकार कर देले रहे आ काल्ह उन्हन के ओहनी का कोआटर से निकालल जाये वाला रहे। ऊ आदमी कहत रहे – ऊ तहमनो का मील मालिक से फरिआलेब जा। चार दिन मील ना चली त होस ठेकाने लागि जाई। बाकिर जबना एक स हो भाई के छँटनी कई दिहल बा, ऊ बड़ा आफत में बाबन। ओह में से कतना त जुलुस में सामिल ना होसकलन काहेंकि कतने दिन से उपास के कारन ऊ चलि ना सकतरहन उहाँ कोआटरन में केहू के मेहरि बेमार परल बिया आ केहू के बचा। केहू के महतारी-बाप एँड़ी रगरता, त केहू के बहिन टीका खातिर मोहताज बिया अबहिये त जुलुस के संगे चलत एगो साथी बेहोस होखे लागल, त हम ओकरा के एक्का में बइठा के दू गो साथियन संगे आपस भेज दिहलीं हँ। एह तरे हमरा खियाल आइल कि बाकी बात तय होत रही आ हम तय कइये के दम लेइब बाकिर हमनी के एह बेकार भाइन खातिर कुछ करे के चाहीं। हमनियों का ओही लोग के बिरादरी के हईं; बाकिर हमनी बेरोजिगार त नइखीं। हमनी त एने-ओने से करजो ले लीला, बाकिर एह बेकारन के करजो के देता। हमनी के जेबि में पाँच-पाँच, दस-दस पइसा त होई। हई हमरा लगे बइठल साथी बीड़ी पी रहल बा। ई बीड़ी के बंडल किनिये के ले रहल बा। अगर काल्हु हम बीड़ी ना पीहीं आ ई पइसा जमा कइके एह भाइयन में बांटि आईं, त हो सकेला कि एगो बचा बांचि जाइ। एगो बहिन मरे ना पाइ, एगो बाप

www.bhojpurisahityangan.com

सिरिफ एह से अपना बेटा से ना छिना जाये कि ऊ ओकरा खातिर पचीस पइसा के टिकिया ना खरीद सकल। दसगो भाई उठस आ पूरा सभा में घूमि के, अइसन सहारा में मिले ओला पइसा जमा करस। जमा हो गइला प सभ गिनल जाई एकर एलान कइल जाई आ सब जुलुस आगे बढ़ी।

× × ×

फइलल झोरी पहिले रहमान के साथी का सोझा आइल। ऊ जेबि से पचासो पइसा निकालि के झोरी में डालि देलस। फेर ई झोली रहमान के सोझा फइलल। ऊ जेबि में हाँथ ढूकवलस तनी रुकल, पचीस पइसा निकालि के ओकरा के अइसे देखलसि, जइसे परदेस जाये वाला संघतियन के बिदाई देवे वाला लोग देखेला आ पइसा झोरी में डाल दिहलसि। झोरी आगे बढ़ गइल, त रहमान के साथी सिकाइत कइलस— का बात बा, पइसा देवे के बेर तोहार हाँथ रुकल काहे रहे ?

—इयार, हमार बच्चा बहुत भुखाइल रहन स! रहमान बोलल।

— त का भइल, हमनी के बच्चा ना भुखाइल रहन स ? साथी कहलस। भुखाइल लइकन के बाप होके तोहरा ई नइखे मालूम कि दुपहरिया के बाद भुखाइल लइकन के भूखि मर जाला।

— हँ· रहमान हुँकारि भरलसि, भुखाइल लइकन के पेट भूखिये से भरि जाला। ई हम कतने बेर देखले बानी दुपहरिया तक चिचिआत रहिहन स, रोवत रहिहन स. बिलुखत रहिहनस फेर सूति जइहन स। जब उठहन स त जइसे खाके उठल होखसन। भुला जालन स कि ऊ त भुखाइल बाड़न स ..

—ऊ भुखाइल होखतो ना करसन। साथी ओकरा के बबवलस, ऊ आपन पेट अपना खून से भरि लेलन स। रहमान अचरज से देखलस — बाकिर ऊ हाँथ-हाँथ भरि के त होलन स, ओहनी के खूनँ आखिर कब तक ओहनी के साथ दे सकेला ?

जब खून साथ ना दे सके त ऊ मरि जालन स। रहमान तड़प के उठल आ खाली बाल्टी खड़-खड़ावत घर का ओरि भागल।

www.bhojpurisahityangan.com

कविता:—

आउर निखरि आई !

—रजनी कान्त 'राकेश'

रगन में एकोबून रकत, जबले रही बाकी।
जूझत रहब हमनी, मुदई एकहू ना रही बाकी॥
बाँची ना कुछो ओहधरी, ओहआखिरी छन में,
हरेक बून जब रकत के, होई एह वेवस्था के बागी॥
आजु के अभिमन्नू एह झोपड़ियन के—
लिहें अब एक-एक जाना से हिसाब,
जबले एकहू कतरा एह भुईं प—
बाँचल रही एह महलन के निसानी!
बोया बो दिहलीं हम रकत के एगो
एह जमीन प आजु के साँझि;
बिहने जवना से लाख लाख रकत जनमो!
चीरि के धरती के, लिखी जुझार के कहानी;
मनाई तब मुक्ति-परब बिजय गान गाई!
एह 'कुटियन के महाबल' जब नापी आकास के बिस्तार
तब धरती का? आकास का? ऊ चंदवो;
पइयाँ पखारे खातिर चरनन में धरि आई।
दिल खोलि के ढाल ए कहर ढावे वाला,
लाली एह लहू के तब आउर निखरि आई!

मुकतक

हक आपन छोड़ि के परइह जनि॥
बाति जाएज कहे में डेरइह जनि॥
सान से जियला के नाँव जिनिगी ह,
मउअत के गीत गइह सिर झुकइह जनि॥

★ ★ ★

कबो मेटकि जाई; का लिखब एह सियाही से!
सही इतिहास जो, लिखे के होखे तोहरा;
त काढ़ि के काँटा, अपना करेजा से तबाही के,
नया इतिहास लिख द अपना खून का सियाही से॥

www.bhojpurisahityangan.com

आपन अधिकार

—ध्रुव

हम टुकरखोर ना हईं,
ना जूठन के खखनल हईं!
ना चाहीं केहू का किरिपा के नजर;
हम माँगतानी आपन हिस्सा!
मेहनत पसीना से उपजल-
सोनहुला हरियर-
गेहूँ-धान के कन-कन
हमरा चाहीं आपन अधिकार!

आपन करम-भूमि,
खेत कारखाना के आजादी,
ओकरा उपज बँटवारा प अधिकार,
हमरा ना चाहीं दया के भीख,
ना कवनो महापुरुष के असीस,
किस्मत हमरा मजबूत बाँहन में बा;
आ इन्किलाबी उसूल हमरा जेहन में बा!

मुक्तक

—मोहन 'मधुर'

पुछलीं अदालत से, इनसाफ कहाँ बाटे?
सुनके बापू के तसबीर लागल काँपे।
इहाँ कवन पूछेला गरीबन के आँसू के?
चाँदी के जूता में इनसाफ छिपल बाटे॥

● ● ●

जिनिगी से जिनिगी के, इहाँ मेल नाहीं होला।
भासन से गरीबी दूर कइल, खेल नाहीं होला॥
दोसरा के रोटी छीनके, आपन पेट जे भरेला।
ओकरा खातिर एह भारत में, जेल नाहीं होला॥

www.bhojpurisahityangan.com

तीन मुक्तक

—लव शर्मा "प्रशांत"

(१)

अपना हक बास्ते वर्ग - दुश्मन का साथ जंग चाहीं
जंग में सफलता ला संगठन आ हिम्मत हरदम चाहीं
कतनो दमन करे केहू, विजय वामपंथे के होई
खाली वर्ग - चेतना का आधार पर लड़े के ढ़ग चाहीं

(२)

वर्ग - चेतना का आधार पर लड़ल लड़ाई सफल होला
वामपंथी अवसरवाद हरदम हमेश विफल होला
बहुते दावा करे वाला समाजवाद के दावा करेलन लेकिन
उनकर समाजवाद, पूँजीवाद के साफ नकल होला

(३)

पूँजीवाद फेरू नया रुप में सामने आ गइल
भारत के जनता पर भरम के बादल छा गइल
अपना - अपना समझ के फेर बा साथी
नागनाथ चल गइल साँपनाथ आ गइल

दू गो मुक्तक

—रामचन्द्र 'बारूद'

गरीबन के अब एकजुट होखे के पड़ी।
पूँजीपतियन के चलती खतम करे के पड़ी॥
रकत के नदी बही, त बदावल जाई;
दुरंगा के अब एकरंगा बनावे के पड़ी॥

★ ★

दुनिया के मजदूरन अब एक हो जा।
सेठियन के नास ला मोरचा बना जा॥
पुलिस के चलती त ई देखते बाड़;
लाल झण्डा लेके अब मैदान में आ जा॥

www.bhojpurisahityangan.com

तीन गो कविता

—हो ची मिन्ह

वियतनाम में संघर्षरत

गुलामी से बेहतर बा मउअतिए
सगरो हमरा देस में बिरोध के लाल झंडा
फहरा रहल बा गरुर से
अइसना समय में ! आह ! केतना दुखदाई बा
बंदी बनल रहल
मुक्त—कब हम होखब—
जुझार में—सामिल होखे खातिर !

राह प

कठिनाई के गेयान,
राह प निकलिए गइला प होला
मुसकिल से एगो प चढ़ते
उभरि जाला दोसर पहाड़
बाकिर एक बेर अगर हमनी जुझार क लिहलीं
आकास छूअत पहाड़न का चोटी तक—
दस हजारन के एक नजर में देखि सकीले !

हजारन कवियन के काव्य-संग्रह

पढ़ला प

पहिले के कवि प्राकृतिक सुनराई के
गीत गावल पसंद करत रहे लोग;
फूल आ चंदा, पाला आ बतास
कुहेस, पहाड़ आ नदी !
आजु हमनी के काव्य. रचना में
चाहीं फवलादी छंद
आ जरुरी बा. कवियन के
हमलाबर टुकड़ी बनावल

—अनुवाद: ध्रुव

www.bhojpurisahityangan.com

● मोजाम्बिकी कविता

लड़ाका के गीत

—जॉर्ज रेबेलो

माई, हमरा लगे बनूक बा
अपना जबना बेटा के एक दिन
तू हथकड़ी-बेड़ी में देखले रहू
(आ रो दिहलू —
जइसे तोहरे हाथ-गोड़ कटि गइल होखे)
ऊ अब मुक्त बा, माई !
अब भोकरा लगे लोहा के बनूक बा
हमार बनूक ह
हम सभ जेहल खोलि देब
सभ अततइयन के नास करब
जमीन बाँटि देहब जन-गन में !
माई, मुक्ति के ई जुझार केतना महान् बा !
हमार चलावल हर गोली
ले जाले नेयाय के सनेस
पुरान सपना जागि उठेला
पंछियन नियन !
जुझार के बेग रन-भूमि में—
तोहरे फोटो नाचेला अँखियन में, माई
हम तोहरो खातिर जूझत बानी, माई
जेह से तोहरा अँखियन में लोर ना होखे !

—अनुवादःमृत्युंजय

साहित्यकार लोगन से अरज बा कि अब ऊ भँड़इती कइल छोड़सु आ जनवादी रचना करसु; जवना में अपना अधिकारन खातिर पूरा-पूरी सजग रहे वाला जुझारुपन होखे। अइसने रचना 'डहर' में छपे खातिर भेजसु !

—सम्पादक मंडल

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी लघु नाटक

जबाब

—लव शर्मा "प्रशांत"

—पात्र—

ठाकुर रामानन्द सिंह – एगो अतेयाचारी जमिन्दार।
विहारी — एगो जवान मजदूरा।
भदई — मजदूरन के मेठ।
कॉ कृष्णन — किसान - सभा के प्रान्तीय नेता।
रमरतिया — गँवई के एगो लड़की।
दिलावर खाँ, लगन सिंह – जमिन्दार के लठैत।

(दृष्य १)

— परदा उठ रहल बा —

(जमिन्दार रामानन्द सिंह का हवेली का बगल वाला फुलवारी में कुछ मजूरा काम कर रहल बाड़न। ई मजूरा सन रामानन्द का करज का बोझा का नीचा दबल बाड़न। ई करज दू पुस्त से ऊ लोग सधावे के कोसिस कर रहल बाड़न लेकिन करज बा कि बेसम्हार बढ़ते जा रहल बा। रामानन्द के हवेली बहुत बड़ बा आ चूना के सफेदी ओह पर चमक रहल बा। हवेली का सामने सिलसिलवार से कुछ फूलो लगावल बा।)

विहारी— (जमिन्दार का हवेली ओरि देखत) "चाचा! ई हवेली कइसे बनल, हमनी के खूने से नू?"

भदई- (धीरा) से "हँ!"

विहारी-(जोश का साथ) "त ई हवेली वाला लोग हमनी के लाचार आ मजबूर काहे समझेलन? आज हमनी एह सेठ आ जमिन्दारन के खेतन में अपन खून - पसीना एक क क खटीले तब एह लोग के घर अनाज से भरेला लेकिन बदला में हमनी के का मिलेला?— बेकारी, फाकाकसी (उपास) आ जानवरो से गइल-गुजरल जिनगी! इहे ना, जब भूख से बेचैन अपना लइकन ला एह जमिन्दार इहाँ अनाज लेवे आइले सन त ई हमनिए के उपजावल

www.bhojpurisahityangan.com

अनाज के, हमनिए के डेढ़िया पर देला, फेर डेढ़िया के बाद डेढ़िया लेला ! ई जुलुम कबले चली काका ? आखिर हर चीज चाहे बात के सीवान होला ! नया कानून बनल ह कि एक मन के डेढ़ मन वाला हिसाब ना चली आ गरीब लोग के जे भूमिहीन बा करज माफ हो गइल। लेकिन तूँ जानत बाड़ कि ई कानून कहवाँ ले सफल हो सकल ! आजो जहवाँ गरीबन के डंटा मजबूत बा किसान सभा के नेतृत्व में एह कानून के लागू कइल जा रहल बा। आ जहवां गरीबन के डंटा मजबूत नइखे ओतहीं गरीब लोग पिसा रहल बा। एहसे हम कहत बानी कि हमनियो एकर विरोध कइल जाव, तूँ का कहतार ? "

भाई- फेर धीरा से। "ठीक बा"

बिहारी- (बिगड़ के खाली ठीक बा, मत कह चाचा। कुछो त कह। आज जमिन्दार रामानन्द के जुलुम आपन सीवान टप चुकल बा। एक तरफ त ऊ हमनी के सोसन करता आ दोसरा ओर ऊ हमनी के बहू - बेटियन के इज्जत का साथ खेलवाड़ कर रहल बा। अंधेर बा अंधेर ... -- लेकिन अब सहल नइखे जात।"

भाई- (बिहारी का तरफ नीमन से देख के) " ई बात ठीक बा लेकिन कइसे का जा सकता ? जमिन्दारन का लगे पहलवान आ लठैतन के जमात बा जे ओकर। एगो इसारा पर मार - पीट ठान देवेलन। ओकनो के एही दिन ला पोसल जाला। ओकनो का मोकाबला हमनी बहुते कमजोर बानी काहे कि हमनी में एकता नइखे। बे एकता आ संगठन के कुछो ना हो सके। देस में आजादी के जवन लड़ाई लड़ल गइल रहे ओह समय पूरा देस एक हो गइल रहे, तबे अंग्रेज जइसन धनी आ चालाक जाति के राज एह देस से खतम कइल जा सकल रहे। एही से हम तोहरा के कहेब कि पहिले गाँव के मजूरन आ छोट किसान का बीच एकता बनावे के कोसिस कर आ सभके किसान - सभा का लाल झण्डा का नीचा जमाकर। इहे एकता एक दिन अइसन आन्ही ले आई जवन जमिन्दार रामानन्द के हमेसा ला खतम क दी। एही से हम ---.."

(नेपथ्य में)

"बचाव -- ... बचाव"

"ई साली त बाड़ा तंग करतिया ... -- अबकी दफे मुँह में पूरा कपड़ा ठूस दे तानी।"

www.bhojpurisahityangan.com

बिहारी--(खीसे काँपत) "चाचा ! ई कइसन आवाज ह ? हमरा त लागता ज--इसे गाँव से कवनो लइकी के जमिन्दार के चमचा पकड़ के हवेली में ले जा रहल बाड़न।

भदई--(बात के दबावे के खेयाल से) "कवनो काम होई।"

बिहारी-- (बिगड़ के) "ना चाचा, ना हमरा कुछ दोसरे सक हो रहल बा।"

भदई-- (धीरा से) "ई तोहरा दिमाग के भरम ह।"

बिहारी-- (धीरा से लेकिन गम्भीर आवाज में) "चाचा ! तूँ हमनी मजूरन के मेट हउव। एह नाता से हमनी के नीमन-बेजाय, नाफा-नोकसान जानल तोहार धरम ह। आज जब तुहँ आपन इज्जत अपने सामने लूटात देखके कुछो ना बोल रहल बाड़ त हमनी के बोलल बेकार बा।"

भदई-- (चिचिया के) "चूप रह ! जादे बोलबे त जीभ खींच लेब। (आवाज कुछ मधिम क के) आज से दस बरिस पहिले के बात ह ओह बखत हमरा लगे तोहरा से जादे जोस रहे। हम रामानन्द का खिलाफ अकेलहीं लड़ाई ठान देले रहनीं। बाद में हम देखनी कि मजदूर वर्ग के कुछ लोग रामानन्द के हाथ बिका गइलन। हम अकेला पर चुकल रहनी काहें कि हमार लड़ाई कवनो संगठन का रूपमें ना रहे। हम ओही लड़ाई में पिसा गइनी। हमार फूस के झोपड़ी फूँक देहल गइल खेतन प कब्जा जमा लेइल गइल आ एक दिन हम दोसरा गाँव से मजूरी क के लवटत रहनी त रामानन्द के लठैत स सरेह में हमरा के घेर के मकई अस थूर देलन। हमरा के मरल समुझ के ऊ लोग लवट गइलन। लेकिन हम मरल ना रहीं। ओही बखत सहर के डा० चटर्जी दोसरा गाँव से मरीज देख के अपना जीप पर लवटत रहन। ऊ हमरा के उठा के अपना जीप पर लदलन आ सहर ले जा के अपना क्लीनिक में इलाज करे लगलन। उनकरा इलाज से हम जल्दिए ठीक हो गइनी। डा० चटर्जी शहर के मजदूर-संघ के सभापतियो रहस। हम उनुका साथे काम करे लगनी। ओतहीं से पूरा नरे चेतना लेके हम करीब एक बरिस पहिले गाँव लवटनी। एतही के लोग के कमजोरी देख के हम चूप रहीं। हम इन्तजार करत रहीं त तोहरे अइसन जवान के जवन हर संघर्ष में अगिलका दस्ता के नेतृत्व कर सकें। अगर तूँ सही में जमिन्दार रामानन्द का साथ टकर लेवे के चाहतार त सबसे पहिले खेतिहर मजदूर आ छोट

www.bhojpurisahityangan.com

किसान लोग के किसान - सभा का झन्डा के नीचा जमा कर आ एकता बनाके संघर्ष के सुरुआत कर । एह संघर्ष में तूँ अकेल ना हो सकब ।"

बिहारी— (खुस हो के) " अइसने होई चाचा । अब किसान सभा बनो आ संघर्ष होई ।"

(परदा गिरता)

(दृश्य— २)

(परदा उठत बा)

(ठाकुर रामानन्द सिंह का हवेली के एगो तहखाना। ई तहखाना रामानन्द का खास कोठरी का नीचे बनल बा जहवाँ पहुँचे के रास्ता उहे कोठरी में टांगल एगो फोटो का पाछे से बा। चारू ओरि देवाल पर लंगटे खाड़ छोकरियन के फोटो टांगल बा। पूरा कोठरी इत्तर के गमक से गमक रहल बा। एक ओरि एगो बड़का टेबुल अंग्रेजी दारू के दू गो बोतल आ एगो खालो गिलास। एगो कोन का लगे एगो सुन्दर पलंग कोठरी के सोभा बढ़ा रहल बा जवना का ऊपर एगो बहुत सुन्नर लड़की बइठल रो रहल बिया)

(ठाकुर रामानन्द सिंह के प्रवेश)

ठा० रामानन्द— (रमरतिया ओरि देखत) " बड़ा सुन्नर लाग रहल बाड़ू रामरति ?"

(रमरतिया दोसरा ओरी मुँह घुमा लेतिया)

ठा० रामानन्द— (हँस के) " हँ ... — हँ — ... तूँ सरमातो बाड़ू ! आरे हम तहरे हँईं; खालो तोहरे ! हमरा से सरम कइसन ?

रमरतिया— (सिसकत) " काहें अपने पाप पर उतारू भइल बानो मालिक ? हमरा बाबू का उमिर के होइयो के अपने हमरा साथ एतना नीच कर्म करे पर तइयार हो गइल बानी। का अपने का कबनो बेटी नइखे ? का अपने के बेटी में आ हमरा में कबनो फरक बा ?"

ठा० रामानन्द— (ठठा के हँसला का बाद) ' तूँ हूँ कइसन बात कर रहल बाड़ू हमार दिल के रानी रामरति ! हमार बेटी त कबनो बड़ घराना के पतोह बनी। ऊ जमिन्दार के बेटी ह जमिन्दार के !

www.bhojpurisahityangan.com

तोहनो के न भगवान हमनिए खा बनवले बाड़न । पहिलका जमाना में राजा आ जमिन्दार लोग हजार - दू हजार छोकरियन के अपना महल में राखत रहे तबहुँओ जब मन ना मानत रहे त परजा के बहू - बेटी के चोरी - छुपे मँगा लेत रहन । आ एगो हमनी जमिन्दार बानी जे चोरा - लुका के अपना दिल के बहलाइयो ना सक तानी । तूँ हो कह रामरती, ई कहवाँ के नेयाय ह ? आच्छा छोड़ ई कुलही बेकार के बात, आव हमनो दारु पिहों । अरे घबड़ा जन, एके घोंट पो ल । ''

रमरतिया— (चिचिया के) '' अब जादे मत कहीं मालिक, बहुत सुन चुकनी ई जहर अपनहीं के फायदा करी । देखीं मालिक, हमरा से दूरे रहीं ना त नीक ना होई ! हम जान दे देब, लेकिन इज्जत ना देहब । ''

ठा॰ रामानन्द— मुस्कियात) '' आच्छा आच्छा हम अब आगे ना बढ़ब हमार परान - पेयारी । घबड़ाए के कवनो जरुरत नइखे । लेकिन केहू तरे तूँ आपन इज्जत ना बचा सकबू, ठाकुर रामानन्द के हाथ बहुत लम्बा बा । इहाँ से अजु ले कवनो छोकरी बेदाग नइखे लवटल । लेकिन एगो बात कहब, एतना खूबसुरती ले के त तोहरा कवनो राज दरबार में जनम लेवे के चाहत रहे । महई में जनमल कवनो जवानी आज ले ना बाँचल । ई कवनो नया बात नइखे (एकरा बाद ठाकुर रामानन्द ओही कुर्सी प जाके ओठंग जाता आ दोसर बोतल खुल जाता । गिलास में दारू ढारे के आवाज)

ठा॰ रामानन्द— (एगो गिलास रमरतियाँ ओरि बढ़ा के) ' ल, तूं हूं पिय । आज के जामना के ई दस्तुर ह कि जब केहू कुछुओ खाए - पीए लागेला त अपना अगल बगल के आदमी के कुछ देला । एही से हमहूँ तोहरा से पूछ रहल बानी । आ फेर ई चीज अकेल पीए वाला हइयो ना ह । ''

रमरतिया— (जोर से) '' ना पीएब, ना पीएब, ना पीएब । एक बेर कह देनी कि ना पीएब तब हमरा के रउआ काहें तंग कर तानी ? हमरा खानदान में आज ले केहू दारू के हाथ से छुवलहूँ नइखे, हम कइसे पीएब । ''

www.bhojpurisahityangan.com

ठा० रामानन्द— (मस्ती में) " हीर, कवनो बात नइखे रानी रामरती ! हमहीं एकरा के पी लेतानी । बात एतने बा अकेले ई कुल्ही पीए में तनको मजा ना आवे । खैर ...... "

(ठाकुर रामानन्द सिंह आपन दुनू आँखि बन क के एके साँस में पूरा गिलास खाली क देता । धीरा - धीरा रामानन्द पर दारू के निसा चढ़े लागता । तनीए देर का बाद ओकरा पर पूरा निसा चढ़ जाता)

ठा० रामानन्द— (आगा बढ़ के) रानी रामरति ! आ...आ..आखिर तूँ डेरा --त काहें बाड़ू ? शिवकलिया के...देख ...पूरा एक महीना ...हमरा साथे --रहलि । ओकर घर तूँ देख -- ले । बा कवनो ---के घर ओकरा जोड़ -- के पूरा गाँव मे ? नसीमा के देख ओकरो घर ओइसने बा ! खेतो दस बिगहा लिख देले -- बानी । ऊ -- सब -- तोहरो से सुन्नर रहन स । ओकनियो.. पहिलका दाव --हल्ला ना कइलन स । आ एगो तूँ बाड़ू -- ! "

रमरतिया— (जोर से चिचिया के) " आगा मत बढ़िहे बुढ़वा । अपन उमिर देख, उमिर ! एगो गोड़ कबर में लटक चुकल बा लेकिन दोसरा का बहू-बेटी के इज्जत लूटे के सवख अभईं नइखे गइल ! हमरा के शिवकलिया आ नसीमा का साथ मत तवलिहे । हीरा जोखे के तराजू दोसरे होला । "

ठा० रामानन्द—(रमरतिया ओरि बढ़त) " हम कइवाँ कहतानी कि तूँ हीरा नइखू ? साँचो आजले हम अँकड़े के पवले रनीहँ, हीरा त हमरा आज नू मिलल ह ! खैर, तोहरा घबड़ाए के जरुरत नइखे, हम तोहर कीमत हीरा से कम ना देब । "

(ठाकुर रामानन्द सिंह रमरतिया ओरि बढ़े लागतारें । रमरतिया दारु के बोतल उठाके रामानन्द ओरि फेंकतिया लेकिन रामानन्द मुड़ी निहुरा लेता आ बोतल देवाल से लाग के फूट जाता । तनि देर ले रमरतिया एने-ओने भागतिया आ रामानन्द खेदता)

ठा० रामानन्द– (रमरतिया के भर पाँजा में दबाके) " ओह –! एतना सुन्नर बाड़ तूँ रानी ! "

रमरतिया – (रोवत) " छोड़ हमरा के पापी ! हमरो के ओही रंडियन

www.bhojpurisahityangan.com

जइसन समुझ रहल बाड़े ! छोड़तारे कि ना ?"

(दुनूं में उठा-पटक ! कुछ देर ले सामान स के एने-ओने गिरला के आवाज आ आखिर में रमरतिया फूलदान उठाके रामानन्द के मुड़ी प मार के घवाहिल क देतिया आ दुआरी खोलके गाँव ओरि भाग जातिया।)

(परदा गिरता)

(दृष्य - ३)

(परदा उठत बा)

(रात के आठ बजि रहल बा। गाँव का बीचे बीच एगो खुलल जगहा पर दू-तीन गो दरी बिछावल बा जवना का बीच में एगो गैस (पेट्रोमेक्स) बर रहल बा। दरी पर कुछ लोग बइठ के आपुस में बात-चीत कर रहल बाड़न। दरी का बगले में एगो लाल झंडा फहरा रहल बा)

[कुछ देर का बाद भदई का साथे कॉमरेड कृष्णन् के प्रवेश। चारु ओरि – इन्किलाब...जिन्दाबाद, किसान-सभा जिन्दाबाद, साथी कृष्णन् जिन्दाबाद हरजोर-जुल्मके टक्कर में – संघष हमार नारा है के आवाज।]

भदई— (लोग के चुप करावत) "साथी लोग ! तनि हल्ला-गुल्ला कम कर अपने सभे। अब एह सभा के कार्यक्रम सुरू होखे जा रहल बा। ओह ! अपने सभन जब एतना हल्ला करब त सभा कइसे होई ? फेर सहर से हमनी का बीच एगो नेता आइल बानी, उहाँके बिचार हमनी के सुने के बा। एतना हल्ला होई त उहाँ के भासन रउवा लोग नीमन से ना सुन सकब।"

(चारु ओरि सान्ति हो जाता)

बिहारी— (उठके) "साथी ! आज ले हमनी जुल्मी जमिन्दार रामानन्द सिंह के जुलुम का जाँत में पिसात अइनी लेकिन ओकरा खिलाफ सभा करेके, के कहो एका शब्द बोलहूँ के हिम्मत केहू ना कइल। आज देस के आजाद भइला २८ साल हो गइल। आजादी से पहिले कांग्रेसी नेता लोग जनता से वादा कइले रहे कि हमनी आजादी के, दूर देहा-

www.bhojpurisahityangan.com

तन ले चहुँपाएब। लेकिन ईसब ना हो के एकरा ठीक उल्टा हो गइल। गरीब गरीबे होत चला गइलन आ धनिक - पूँजीपति के तिजोरी दिन-दूना आ रात चौगुना बढ़ते चल गइल। आज रउवा लोग देखिए रहल बानी कि बटाई, खेत मजदूरी आ सिलिंग के कानूनो बन चूकल बा लेकिन ई सरकार ओकरा पर ढीक ढग से अमल करी ? ना करी , काहें कि ई सरकार पूँजीपतियन के ह। एके हमनी के संगठन बनाके संघर्ष का बल पर लागू कराबे के परी। एसे किसान - सभा का झंडा का नीचा संगठित होखे के जरुरत बा। किसाने-सभा का झंडा का नीचा संगठित हो के कइल कवनो संघर्ष असफल ना होखे। हम आजके सभा का सभापतित्व ला अतिथि नेता साथी कृष्णन् के नाँव प्रस्तावित करत बानी।"

भदई— (उठ के) " हम एकर समथन करतानी। "

बिहारी— (आदर का साथ) " साथी कृष्णन् जी ! अब अपना भासन से हमनी के नया रास्ता देखाईं। "

(साथी कृष्णन् मंच पर खड़ा हो जा तारें)

कॉ० कृष्णन्— (जोस का साथ) " साथी ! हम एह गाँव में किसान सभा के काम से आइल रहनो ह। हम एतहीं आवते देखनी कि जे संख्या में जादे बा ओकरा के एगो आदमी अपना धन आ कुछ लठैतन के बल पर दबा रहल बा। हमरा ई देख के कवनो अचरज ना भइल काहें कि ई सब हमनी का देस में बहुते जगहा पर होते रहल बा। एकर एगो कारन बा आ ऊ बा एकता के कमी जवले रउआ लोग एक ना होखब, तबले जमिन्दार एका-एकी सभे के पीसत रही आ सब लोग टुकुर - टुकुर देखते रह जाई। लेकिन मजदूर आ किसान में ई एकत कइसे आई; चेतना कइसे आई ? हमरा से सुनी — .. ... ई एकता आ चेतना आई लाल झंडा का जरिये। आज जहवाँ - जहवाँ के खेतिहर मजदूर आ किसान किसान - सभा बना के लाल झंडा के नीचा अपन चट्टानी एकता कायम कइले बाड़न उहाँ कवनो जोर - जुलुम नइखे कवनो अन्धेर नइखे। ओतहीं कवनो जमिन्दार बटाई जमीन से बटाईदार के बेदखल ना क सकता पाँच रुपया से कम मजूरी पर केहू काम ना करा

www.bhojpurisahityangan.com

सकता आ ना एक रुपया सैकड़ा से जादे सूद ले सकता। आज जहवाँ – जहवाँ किसान सभा बा ओतहीं जमिन्दार के कहल ना चले बलुक किसान - सभा के कहल चलेला। साथी ! रउआ लोग सोचीं ई बड़ - बड़ हवेली स देहातन में जे खड़ा बा, ऊ केकरा बल पर बनल ? ई हवेलियन के नेव के देहल ? आज एह हवेलियन में रहेवाला लोग जवन ऐयासी के जिनगी बिता रहल बाड़न ओकरा ला ऐयासी के समान के जुटा रहल बा ? आज एही गाँव के जमिन्दार ठाकुर रामानन्द सिंह के डेढ़ सौ एकड़ जमीन के जोतेला ? रउए सभे जात रहल बानी, लेकिन रउआ सभे के एकरा बदला में का मिलता ? कुछउ ना ! एकर कारन, रउआ लोगनी में एकता के कमी बा। एसे रउआ सभे किसान - सभा के सदस्य बनीं आ संघर्ष के आवाज बुलन्द करीं"। अगर अपने सभ मिल के एक जूट होके संघर्ष में उतर गइलीं त जमिन्दार ठाकुर रामानन्द सिंह ना बलुक हजारन जमिन्दार अपने सभे के कुछुओ ना बिगाड़ सकिहें। आज से अपने सभे पाँच रुपया से कम पर काम मत करीं आ बटाईदार लोग जमीन मत छोड़ो। जे लोग बटाई का जमीन से बेदखल क देहल गइल बाड़न। ऊ लोग के बटाईवाला जमीन पर फेर से कब्जा दियावे के कोसिस किसान - सभा करी। जमिन्दार रामानन्द के बेनामी जमीनों के अपने सभे पता लगावे के कोसिस करीं। पता चलला पर ओहू पर हमनी कब्जा लेब। हमरा एतने कहे के बा। लाल सलाम !'

(कामरेड कृष्णन् अपना जगहा पर बइठ जालें)

बिहारी—(मंच पर खड़ा होके) "अच्छा त अब ई सभा खतम हो रहल बा। अपने सभे अपना-अपना घरे जाईं। बिहान से हमनी तबे काम करे जाएब जब हमनी के पाँच रूपया मजूरी मिली। एतना से कम पर हमनी के काम पर जाएके नइखे। अब नारा बोली—

"इन्किलाब जिन्दाबाद !"
"जिन्दाबाद ! जिन्दाबाद !"
"किसान-सभा जिन्दाबाद !"
"जिन्दाबाद ! जिन्दाबाद !"
"हर जोर जुलुम का टक्कर में !"
"संघर्ष हमार नारा बा !"
"जे हमनी से टकराई !"
"चूर-चूर हो जाई !"

(सब के प्रस्थान)

(परदा गिरत बा)

www.bhojpurisahityangan.com

अंक – (२)

(दृश्य — १)

—परदा उठ रहल बा—

(भोर के बखत बा। ठाकुर रामानन्द सिंह के हवेली के दृश्य जवना का एक ओरि फुलवारी बा जवना में सुन्नर - सुन्नर फूल का आला-वां कतहीं - कतहीं आम आ लीची के गाँछि लउकत बा। एह बखत ठा॰ रामानन्द फुलवारी में टेबुल - कुर्सी लगा के आमद - खरच के बही देख रहल बाड़न)

(चार गो लठइतन के प्रवेश)

एगो लठइत – (जोर से) " मालिक ! "

ठा॰ रामानन्द — (मुड़ी ऊपर उठा के) " लगन सिंह ! आखिर बात का बा जे एतना हाँफ रहल बाड़ ! "

लगन सिंह — (हाँफत) " बहुत बड़का बात बा मालिक। सुनब त अपने लुत्तो हो जाएब। "

ठा॰ रामानन्द — (चिन्ता का साथ) " ओह ! आखिर बतइबो करब कि हाँफतहीं चल जइब ? "

लगन सिंह — (सकपका के) मालिक ! गँवई के छवारिक [illegible] मिलके ...

ठा॰ रामानन्द – (जोर से) " चूप रह ! (दिलावर खाँ ओरि घूम के) दिलावर खाँ ! "

दिलावर खाँ — (चिहुंकत) " जी मालिक। "

ठा॰ रामानन्द — (ऊपर से नीचा ले ताक के) तूँ बताव, आज कवन अइसन बात हो गइल ह कि लगन सिंह अइसन लठैत के होस उड़ गइल बा

दिलावर खाँ — (धीरा से) " जी गाँव के कुछ छवारिक सब मिलके चमटोली में सभा कइलन ह स आ किसानो - सभा बनवलन ह स। "

ठा॰ रामानन्द — (चिहुँक के) " का कहलेह ? किसान सभा बनवले ह स ! "

दिलावर खाँ — (बहुत धीरा) ' एतने ना बलुक अपने का खिलाफ जोस खरोसवाला भासनो भइल। "

ठा॰ रामानन्द — (खीसे दाँत पीसत) " का कहले ? जोस खरोसवाला भासनो भइल ! बिलार का खिलाफ मिटिंग त भइल लेकिन बिलार का गर में

www.bhojpurisahityangan.com

घंटो कवन बान्हो ? "

दिलावर खाँ— (अचरज का भाव में) " मालिक ! अपने के ई गजब के मुहावरा भरल बात हमरा समझ मे नइखे आवत, तनि सीधा तरे से कहल ना जाव । "

ठा० रामानन्द— (आँख गुरेरत) ' हम ई जाने के चाहत बानी कि एकनी के नेता कवन बा ? ठाकुर रामानन्द, जवना का भय से सरेह के खरो जरे लागत रहल ह आज ओकरे से कवन टकराए के सोच रहल बा ? कवन एकनी के पाछा से मदद कर रह बा ? हम ई सब जाने के चाहत बानी दिलावर खाँ ! "

दिलावर खाँ— " मालिक ! एकनी के नेता भदइया बा, जब कि ऊ सभा में कुछुओ ना बोलल । लेकिन हमहूँ त अपनहींके आदमी ह ; पलक गिरे से पहिले जान गइनी कि ई सब भदइया के कारस्तानी ह । "

ठा० रामानन्द— (मुट्ठी पर जोर देके) " कवन भदइया ? "

दिलावर खाँ — " मालिक ! ई उहे भदइया ह जवना के एक बेर हम करीब करीब खतमे क देले रहीं खाली अपने रोक देलीं जवना का कारन हम ओकर जान छोड़ देलीं । अगर ओही बखत ओकरा के खतम क देल गइल रहीत त आज ई सभा ना होइत । "

ठा० रामानन्द— (अचरज का साथ) ' आच्छा ! त ई उहे भदइया ह ? "

दिलावर खाँ— (निहुर के) " जी मालिक । "

ठा० रामानन्द - (खीसे काँपत) " दिलावर खाँ ! अबकी दफे ऊ बाँचे ना पावे । सबकी ओकर छोटे गल्ती रहे एसे हम छोड़ा देले रहीं । ऊ हमार बड़ गल्ती रहे, आज हम कबूल करतानी । आज ई सब कुछ हमरा बर्दाश्त से बाहर के बात बा । हमरा खिलाफ किसान सभा बन गइल । एतने ना बलुक हमरा खिलाफ भासन का जरिया बगावत के आगो लगावल गइल ह । दिलावर ! "

दिलावर— (तनी फेर झुक के) ' जी मालिक ! "

ठा० रामानन्द— (सवाली मुद्रा में) " अबरी कवन - कवन स बाड़न ओकरा साथ ? "

दिलावर खाँ " मालिक ! आज काल ओकरा साथ बिहरियो बा । "

www.bhojpurisahityangan.com

ठा० रामानन्द – (मुद्रा पर जोर देत) "कवन बिहरिया ?"

दिलावर खाँ (इयाद करावे के मुद्रा में) "मलकार ! ऊ देवराज मलाह के बेटा ह । बड़ कसरती जवान बा । एकरा मलावों सहर से एगो जनवादी लीडर जगन्नाथनो आएल बा । उहे एह किसान-सभा के सभापति चुनाएल बा । बड़ा जोसीला आ बगावत फइलावे वाला टोन में भासन करत रहे ओह दिन ! एकनी के जल्दिए ठीक करे के परी ना त बगावत हो जाई त दबवले ना दबी ।"

ठा० रामानन्द — (दाँत पीसत) "देख लेब सबके ! हमहूँ सेर के बचा हईं । ई सब कीड़ा-मकोड़न के दिमाग चढ़ गइल बा ! एके जल्दिए ठीक करे के परी ना त इहे एगो चिनगो पूरा जंगल के राखि बना के छोड़ दी । तोहनी सब केहू अपना-अपना हथियार के पिजा लिह ।"

दिलावर खाँ — (खुस हो के) "पिजावल जा चुकल बा मालिक ; खाली अपने के हुकुम के इन्तजार बा ।"

(परदा गिरत बा)

(दृश्य – २)

(परदा उठत बा)

(गाँव का बगल में बिहारी अपना बटाई वाला जमीन पर हर चला रहल बा । अगल-बगल का खेतन में गाँव के बटाईदार लोग हर चला रहल बा । ई सब खेत जमिन्दार ठाकुर रामानन्द के ह)

(लाठी का साथ दिलावर खाँ के प्रवेश)

दिलावर खाँ — (बिहारी से) "बिहरिया तोरे नाव ह ?"

बिहारी — (तुनक के) "दिलावर खाँ, तमीज से बात कर ।"

दिलावर खाँ - (रोब का साथ) "तोर नाँवे जब बिहरिया बा, त तोरा के केहू लाट-साहेब थोरे कही !"

बिहारी — (हर रोक के दिलावर खाँ का लगे चहुँप के) 'हमर नांव बिहारी ह, बिहरिया ना । तूँ तनी तमीज का साथ बात कर ना त हमरो कुछ देर वास्ते मजबूर हो जाए के परी । बहुत सह चुकनी, अब ना सहब ।"

दिलावर खाँ - (बिगड़ के) "चुप ! तूँ का कुछो करबे हमरा साथ ! हमर

www.bhojpurisahityangan.com

नांव दिलावर ह दिलावर ! जात के पैठान हईं । तें भुला गइले ; मलिकार के एक इसारा पर तोरा बाप के हम मार के फेंक देले रहीं आ पूरा गँवई में एको आदमी ना बोलल ।"

बिहारी – (खीसे काँपत) " अपना के रोक दिलावरा ना त तोहार आज हड्डा-हड्डी तूर के हम फेंक देब । ऊ जमाना दोसर रहे जब तोहनो के चलती रहे ; अब हमनी लाल झंडा वालन के जवाना बा । तूँ अपना सोवान से आगा बढ़ रहल बाड़े ।"

दिलावर खाँ— (हसँत) " बाप त अइसन अझुरइलें कि सोधा जन्नत चल गइलें ! अब अ करे बेटा अझुराए के चाहतारें । इनको के शोतहीं भेजे के परी..... ।"

(बिहारी दिलावर खाँ के लाठी छीन के दूर फेंक देता आ ओकर कमीज के कॉलर पकड़ लेता । तबे अगल- बगल से हरवाह सन अपना-अपना हाथ में लाठी ले के बिहारी को लगे जा के ठड़ा हो जातरन । दिलावर खाँ ओतना लोग के लाठी ले के आवत देख के सटक जाता आ चुपे रहे में अपन भलाई समझत बा)

बिहारी – (खीसे काँपत आवाज में) " ऊ दिन भुला जो रे जमिन्दार के जूठन चाटे वाला चमचा जब तोहनी गांव के कवनो के पीट के चल जात रह स । अब हमनी गँवई क मजदूर आ मझोला किसान एक हो गइल बानी सन । हमनी किसान-सभा के लाल- झंडा का छाँह में संगठित हो चुकल बानी सन आ जमिन्दार आ ओकर चमचा स से दू- दू हाथ करबो करेला हमेशा तइयार बानी सन । तू आ तोहार ऊ रामानन्द सिंह इहो भूला जइह लोग के तीन- चार हजार रोपेया खरच क के सय- दू सय लठैतन के दोसरा जगे से इहाँ ले अइहें । आउर ऊ दू सौ लठैतन के रोपेया पर मँगइहेंन त हमनी किसान सभा के हजारन सदस्य लोग के दोसरा जगहा पर से मँगा लेब । रामानन्द दू हजार पहलवान मँगइहें त हमनी दू लाख मँगा लेब । किसान- सभा इहे अगल- बगल के दू चार गो गांव में नइखे बलुक पूरा दुनिया में बा । एगो आदमी से लड़ल जा सकेला लेकिन एगो संस्था से ना लड़ल जा सके । एतनो पर अगर केहू एगो अखिल भारतीय संस्था से मोकाबला करे के सोचता त हम समझत

www.bhojpurisahityangan.com

बानी कि ओकरा अइसन बेवकूफ दोसर कवनो ना होई । एसे हम तोहरा से कह रहल बानी कि जमिन्दार रामानन्द से कह दीह कि अब ऊ जमाना खतम हो गइल जब अंग्रेजन के राज रहे आ ओकरो बाद बुर्जुवा वर्ग के कांग्रेसीयन के एकछत्र राज्य रहे । ओह बखत ऊ जे कुछो चहलें से कइलें लेकिन अब ऊ जमाना नइखे रह गइल, अब सर्वहारा कुछ होसियार हो चुकल बा एसे सम्हर जास । ना त कहीं कवनो जमहर मामला- मुकदमा खड़ा हो जाई त बाद में सम्हरिए के का होई ! जब इज्जते चल जाई त सम्हरिए के का होई !"

दिलावर खाँ— (सिपाही वाला रुआब में) "आच्छा कह देब, लेकिन तोहनियो तइयार रहिह। मालिक के क्रोध बड़ खतरनाक होला। उनका से झगड़ा कइल गहुँअन साँप पर ढेला चलावला से कम खतर-नाक ना होला। खैर ई सब त तोहनी का अपना समझदारी पर बा ; अभई हम ई कहे आइल रनी ह कि मलिकार के हुकुम बा कि तोहनी एह खेतन में हर मत जोत काहें कि ई कुल्ही खेत मलिकार के ह।"

बिहारी — (जोर से) "दिलावर खाँ ! का बुरबक अस बात क रहल बाड़। ई कुल्ही मलिकार के ना, हमनी हर जोतेवालन के खेत ह। तोहार मलिकार के खाली मालगुजारी लागेला आ हमनी बोया, जोताई, सोहनी, बिधउनी आ कटनी करीले एसे हमनिए एकर असली मालिक भइनी सन । तूँ जाके अपना मलिकार से कह दिह कि गँवई के लोग मिल के किसान - सभा बटाईदार लोग के दखल दिया बेला बनल बा, बेदखल करे वास्ते ना ! अगर रामानन्द के लाठी में जोर होखे त किसान- सभा से ओजमालेस काहें कि अब त जवन लड़ाई होई तवन केहू अकेला आदमी से ना, बलुक किसान-सभा से होई। लेकिन तोहरो से एगो बात कहब दिलावर खाँ।"

दिलावर खाँ—(घुमत) "कह।"

बिहारी — (नरम आवाज में) "तूँ बगले के गाँव के रहनिहार ह.व। ए नाता से हमनो के भाइये भइल। अब तूँ ही हमनी के बताव कि आखिर ऊ कवन अइसन बोजह बा जवना का चलते तोहनियो अत्याचारी जमिन्दार का इसारा पर अपने भाइयन पर लाठी बरसावे लागेल ?"

www.bhojpurisahityangan.com

दिलावर खाँ - (हँस के) " तूँ ना समझब बिहारी । ओ लोग का साथे ना रहब त ई मजा कइवां से मिली ? रोज दू बोतल दारू, गोस्त, खाना आ रोज राति में एगो छोकरी ई सब दोसरा जगहा पर मिली कहँ ?

बिहारी— " ठीके बा, ओ अत्याचारी का साथे रहत - रहत तोहरो दिमाग भ्रष्ट हो गइल बा । लेकिन दिलावर खाँ एतना जरुर ख्याल रखिह कि जब संघर्ष सुरु होला त सबसे पहिले चमचे लोग के खोज - खोज के फिंवाई कइल जाला बाद में जमिन्दार के ! अब बहुते जल्दी तोहनो का साथ मुकाबला होई, एही में पता चली की ठा० रामानन्द एगो व्यक्ति बरियार बा कि किसान - सभा । हमनी तुरन्ते रतरतिया वाला हिसाब लेबे आएब स ।"

दिलावर खाँ - (जाते - जाते) " हिम्मत होखे त हाथ मिला लिह । पाछे पाता चली । पहिले - पहिले सभे एही तरे कहेला । बाद में भटक खुलेला ।"

बिहारी - (जोर से) ' कवनो बात ना, देखत जाई । तूँ आपन सोच रे बलि के बकरा ! "

(परदा गिरत बाटे)

(दृश्य - २)

(परदा उठत बा)

(दिन के बारेह बजत बा । ठा० रामानन्द के हवेली के ओसारा । टेबुल-कुरसी लगावल बा लेकिम ठा० रामानन्द अपन दुनू हाथ पीठ पाछे बान्ह के एने- ओने घूम रहल बाड़े । चेहरा परेसानी से भरल बाटे । रह- रह के दरवाजा ओरि घूम के देख लेतारें । इन्तजार करत दुनूँ आँखि ।)

(दिलावर खाँ के प्रवेश)

ठा० रामानन्द - (दाँत पीसत) " साला सब एतना कह गइलन स ! ई सब कुल्ही बात के पता चलल कइसे ससुरन के ?

दिलावर खाँ - (डेरात) " हम नइखी जानत मलिकार । "

ठा० रामानन्द - (आँखि लाल क क) ' लगन सिंह से हमरा पता लच चुकल बा । तूँ फेर से कह , बिहरिया का कहलस ह ? "

दिलावर खाँ - (स्वभाविक मुद्रा में) ' मलिकार ! हम जातहीं बिहरिया

www.bhojpurisahityangan.com

कहके बोलउनो ह त ऊ कहलस ह, तमीज से बात कर। " ओकरा बाद कुछ क घालहूं के कहलस त हमरा ना बर्दाश्त भइल आ कहनो — बाप त अइसन अभुरइलें कि सीधा जन्नत में चल गइलें। अब ओकरे बेटा अभुराए के चाहतारें। " सरकार ! एतने पर ऊ हमार लाठी छीनके दूर फेंक देलस आ कमीज के कॉलर पकड़ लेलस। एकरा बाद त अगल बगल के खेतन से बटाइदार स हाथ में लाठी ले के ओकरा बगल में ठढ़ा हो गइलन स जइसे विहरिया ओकनो के नेता होखे ! हमरा दब जाए के परल काहे कि हम अकेला रहीं आ ओकनो करीब पचास-साठ के संख्या में पूर गइल रहन स आ अवरो बढ़ते जात रहन स. आखिर में जब हम कहनीं कि भाई, हम झगड़ा करे नइखीं आएल बलुक मालिक के हुकुम कहे आएल बानो कि मलिकार के हुकुम बा— तोहनो एह खेतन में हर मत जोत काहे क ई सब खेत मलिकार के ह। ए पर विहरिया कहलस कि— का बुरबक अस बतियारे ई सब खेत त हमनो कमाए वाला के ह। तोहार मलिकार त खाली मालगुजारी दे लें, सब कमवा त हमनिए करीले, एसे एकर असली मालिक त हमनी जोतनिहार भइनो सन किसान- सभा बटाईदार के हक दियावे ला बनल बा, हक छीने ला ना ! ओकनो इहो कहलन स कि, अगर रामानन्द का लाठी में जोर होखे त किसान – सभा से ओजमालेस काहे कि अब त जवने लड़ाई होई तबन केहू अकेला आदमी से ना बलुक किसा- सभा से होई। "

ठा० रामानन्द— (अचरज का साथ) " ससुरा स एतना कह देलन स आ तूं सह गइले ? "

दिलावर खाँ— (धीरा से) " त अकेला करिए का सकत रहीं सरकार। हम अकेला रहीं आ ओकनो साठ-सत्तर ले पुर गइल रहन। चारु ओरि एगो आजब सोन लउकत रहे। "

ठा० रामानन्द— (रोब से) " काल्ह तक ठा० रामानन्द सिंह के अकेल सिपाही गाँव में जात रहल ह आ अकेलही पूरा गाँव के लोग के पीट के चल अबत रहलह। एगो तूँ बड़े ! नामरद, आगे कह –"

दिलावर खाँ — (एने-ओने देखला का बाद)" ओकनो हमरा लवटे का बखत

www.bhojpurisahityangan.com

में इहो कहलन स कि— "पहिले ऊ जे भी कइलें- कइलें लेकिन अब जमाना बदल गइल अब सब केहू होसियार हो गइल बाड़न एसे सम्हर जास ना त कहीं कवो कवनो लमहर मामला मुकदमा खड़ा हो जाई त बाद में सम्हरिए के का होई ! अब आगेवाला बात हमरा से ना कहल जाई ।"

ठा० रामानन्द— (चिचियाके "दिलावर खाँ ! जवने बात होखे निर्भय कह डेराय के कवनो जरुरत नइखे ।"

दिलावर खाँ— (बहुत धीरा) "मलिकार ! ओकनी कहलन स कि ओकनी बहुते जल्दी रमरतिया वाला हिसाब लेवे... ..",

ठा० रामानन्द— (चिचिया के) "दिलावर खाँ ! ई सीवान से बार के बात बा । हम सब कुछ सह जाएब लेकिन ई सब कुलहो ना सह सकीं । दिलावर खाँ, एक दफे फेर कह कि जे कुछ तूँ कहलह से ठीक बा कि खाली ... ..."

दिलावर खाँ— (काँपत) "सोरह आना सही बा मलिकार । अपने के नोमक किरिये, ऊपर खोदा गवाह बाड़न- हम जे जे कहनी ह ऊ सब सही बा । आज बड़बेइज्जत होखे के परल हमनी के; खाजा अपने का तनि नरम हो गइला का बोजह से ।"

ठा० रामानन्द – (काँपतहीं) "घबड़ा मत दिलावर ! ई सब के गरह सब एक जगहा पर जबर हो गइल बा । अबकी देखत बानी कि कुछ खून होइये के रही ।"

दिलावर खाँ— (लाठी सरियावत) ' मलिकार ! हुकुम दीं त हम तुरन्ते कुछ लठइन के ले के ... ... ।"

ठा० रामानन्द— (रोकत) दिलावर ! सब्र से काम ल । एकनो के दोसरा उपाय से ठीक कइल जाई । अब कानूनो बदल गइल । अब खून कइल आसान हो गइल बा लेकिन पचावल बड़ मुश्किल हो गइल बा । एकह जो खून में हजारन रोपेया लाग जाता आ समयो बर्बाद बहुते होला । फेर ' अब ओकनी एगो संस्था का झंडा का नीचा संगठित हो गइलन बाड़न स । एगो आदमी से टकराइल जा सकता लेकिन एगो होशियार आदमी कबहूँ अखिल भरतीय स्तर के कवनो पार्टी से ना टकराए । टकराके के जितियो ना सके । लेकिन हम एही तरेह छोड़

www.bhojpurisahityangan.com

ना देब, खाली ढंग दोसर होई। तनिको चिन्ता जन करिह।"

दिलावर खाँ— (उदास हो के) "ठीक बा मालिकार! जरूरत परला प इयाद कइल जाई। आपन बेइज्जति के बदला त हमरा ओकनो से सधावे के बा।"

ठा॰ रामानन्द— (धीरा से) "अच्छा, अब तूँ जा सकतार।"

दिलावर खाँ— (मुड़ी तनि निहुरा के) "सलाम हजुर।"

ठा॰ रामानन्द— (महटियावत) "सलाम!"

(दिलावर खाँ चल जाता)

(फेर ठाकुर रामानन्द चिन्ता में मरल एने-ओने घूमे-फिरे लाग तारें। कबो-कबो खासे मुड़ी पोटे लाग जा तारें। कबो बइठ तारें त कबो ठढ़ा हो जा तारें।)

ठा॰ रामानन्द— (खुशी का साथ) "मुंशी जी!"

(नेपथ्य में)

अइनी सरकार..........।"

(मुंशी जी के प्रवेश)

मुंशी जी— (मुड़ी निहुरा के) "का हुकुम बा सरकार?"

ठा॰ रामानन्द— (मुस्कियात) "मुंशी जी! अब पानी माथ से ऊपर होखे जा रहल बा। अब बे कुछो कइले काम चले के नइखे। बहुत सोचला का बाद हम तय कइनी ह कि बिहारी, भदईआ आ अबरो सात जना किसान-सभा के दोसर सदस्यन प जे किसान-सभा में अगिला दस्ता के काम कर रहल बाड़न झूठ मोकदमा दायर क दीं आ एही मोकदमा में एह लोग के हिम्मत तूर दीं। एकरा ला हमरा एगो मुद्दई आ पाँच गो गवाह चाहीं जे झूठ गवाही दे सके। ई काम रउरा जिम्मे रहल। बोलीं रउवा ई काम कर सकब?"

मुशी जी— (अचरज से "सरकार! अपने से पार पावल बड़ मुश्किल होला। अब किसान-सभा वालन के जियल मुश्किल हो जा जाई मुद्दई आ गवाह जुटावल त हमरा ला पाँच-दस मिनट के काम बा सरकार!"

ठा॰ रामानन्द— (ठीक बा, तूँ उहनि के तइयार कर।"

(मुंशी जी लवट जा तारें)

ठा॰ रामानन्द— (मुस्कियात) "अब देखब सारन के।"

(परदा गिरता)

www.bhojpurisahityangan.com

अंक– ३

(दृश्य — १)

[परदा उठत बा]

(जमोन्दार ठाकुर रामानन्द सिंह के कोठली, एक ओरि शानदार पलग, एक ओरि के कोनतर एगो आलमारी जवना में बहुत-सा कागज-पत्तर बा, एगो टेबुल पर शराब के बोतल धइल बा। ठाकुर रामानन्द कोठली में एने-ओने घूम रहल बाड़न। चेहरा पर बड़ उदासी लउकता।)

ठा० रामानन्द – (कुर्सी पर बइठत) "लगन सिंह !"

(नेपथ्य में)

"अइनी मालिक !" (लगन सिंह के प्रवेश)

ठा० रामानन्द — (उदासी का साथ) 'लगन सिंह ! बड़ गम्भीर परिस्थिति अ गइल बा। किसान सभा वाजन के ठीक करेला सब कके डार गइन लेकिन जगन्नाथन, भदइया आ बिहरिया का जानी एकनी के कवन चीज घोर के पिया देले बा कि डराते नइखन स। कवनों के खाली रे.....कह दियाता त मरे-मारे पर उतारू हो जातारन स। भदइया, बिहरिया आ गँवई के अवरो पनरेह जना दोसर लोग पर हम जब झूठ मोकदमा कइनी त किसान-सभा के सभा में मोकदमा लड़ेला पाँच सय रोपेआ चन्दा तसीला गइल। कचहरियों में वकील आ तांइद एकनी के पाटिए के बाड़न स, ओकनियों एक्को पइसा एकनी से नइखन लेत स। फेर पाटीवाला मोकदमा में किरानियो लोग पइसा माँगे के हिम्मत ना करे।"

लगन सिंह— (मोंछ पर ताव देत) "मलिकार ! घबड़ाईं जन, ओकनी के नेतागिरी खतम करे के बस अब एके गो रास्ता बँच गइल बा। अब उहे करे के परी।"

ठा० रामानन्द— (खुश हो के) "कवन रास्ता ?"

लगन सिंह— (गुण्डा नियर चेहरा बना के) "तीनूं जना के पोला के धोखा से एतहीं बोलावल जाय, आ तब कुछ रोपेया दे के रास्ता से हट जाय के कहल जाई।"

ठा० रामानन्द— (सवाली मुद्रा में) "आ कहीं एह लालच में ओकनी ना

www.bhojpurisahityangan.com

अइलन स तब ? "

लगन सिंह— (रोब से) " एक-एक हजार से मा मानी त दू-दू हजार दियाई आ दस-दस बिगहा खेतो दे दियाई । ओकनी के चुपाते एतना त एक महीना में गँवई का लोग से हमनी असूल लेब स । आ अगर एतनो पर ना मानल लोग त मरम्मत क के नीचा तहखाना में बन्न कर दियाई ।

ठा० रामानन्द— (खुश हो के) " लगन सिंह ! हम त सोचत रहीं कि तू खाली लाठिए चलावे के हाल जाने ल लेकिन आज इहो मान जाए के परल कि तू एगो नीमन दिमागो राखेल । अच्छा त जा, ओकनी के निश्चिन्त में कहिह कि मलिकार बोलाव तारें । जगन्नाथन के छोड़ दिह, ऊ पाटी के बड़ नेता बा, ओकर खोज जिला कमीटी वाला करे लगिहन स आ बात गड़बड़ा जाई । एसे बिहरिया आ भदइया के ले अइह । जगन्नाथन, एकनी के बन्न हो गइला का बाद अकेला रह जाई आ फेर ऊ बाहरा के बा- ज्यादे दिन ले टिक ना सकता । अच्छा त जा । '

(लगन सिंह वापस लवट जाता)

(फेरु रामानन्द सिंह एनो - ओने घूमे लागत बांड़ें, माथा पर के केस छितरा गइल वा आ बड़ चिन्ता लउकता । आलमारी ओर बढ़के आलमारी से दू-दू हजार के दूगो गड्डी निकाल तारें । आ टेबुल पर बइठ जा तारें ।)

ठा० रामानन्द— (जोर से) " दिलावर खाँ ! "

(नेपथ्य में)

" अइनी मालिक —"

(दिलावर खाँ के प्रवेश)

ठा० रामानन्द — (मुस्कियात) " देख दिलावर ! ! आज हम एगो चाल चल रहल बानी । "

दिलावर खाँ — (सवाली रंग में) ' ऊ कवन मलिकार ? "

ठा० रानानन्द — (मुस्कियाते) ' तुरन्ते करीब दू-तीन घंटा बाद बिहरिया आ भदइया आवतारें स ओकनी के दू-दू हजार रोपेआ दियाई आ रास्ता से हट जाए के कहल जाई अगर एतनो पर ना मानी लोग त

www.bhojpurisahityangan.com

निचिलका तहखाना में बन्न क दियाई। एकरा बाद थाना में दरोगा जी के कुछ रोपेआ देके झूठ-चोरी के मोकदमो क दियाई। तूँ तइयार रहिह।

दिलावर खाँ— (खुशी में झूमत) "अपन हूँ खूब दाव सोचि ले मलिकार। अब हमार बेइज्जती के बदला लेवे के समय आ गइल बा।"

ठा० रामानन्द — (होशियार करत) "एह तरेह से चिचिया मत दिलावर। जा के सब लठैतन क हाशियार क द - हमार इशारा पावते हमला क दिह लोग।"

दिलावर खाँ— 'अच्छा मालिक।"

(दिलावर खाँ वापस लवट जाता)

(बहुत देर ले ठाकुर रामानन्द कपार झारत एने-ओने घूम तारें)

(एगो लठइत के प्रवेश)

ठा० रामानन्द - (रोब से) "का ह ?"

लठैत - (मुड़ी गाड़िके "लगन भाई बिहारी आ भदई का साथ आ रहल बाड़न।

ठा० रामानन्द— (खुशी से) 'ओ लोग के एन हीं भेज द।

(लठइत वापस चल जाता)

(तनि देर का बाद लगन सिंह का साथ भदई आ बिहारी कोठली में आ के रामानन्द के प्रनाम करतारे)

ठा० रामानन्द — (नरमी का साथ) "भदई जी ! पहिले अपने लोगन नोमन से बइठ जाईं।"

भदई— (धीरा से) "पहिले अपने ऊ बात कहल जाव जवना ला अपने हमनी के एहीं बोलउले बानी। समझल जाव कि हमनी बइठ चुकनी। फेर हमनी अइसन मजूरा के त बइठे के समयो त कमे मिलेला।"

ठा० रामानन्द—]चेहरा पर हँसी ले आ के) 'ई त अपने लोगनी के बड़प्पन ह। एह जमाना में एतना सोचवे के करेला ! आज-काल त तनोमनि पढ़ लेला का बाद सभे बाप-दादा के प्रनामो कइल भूला जाला।"

भदई— (चौकआ हो के) "हँ, त कहल जाव कि हमनी के कहेला ब लावल गइल ह ?"

ठा० रामानन्द— (मुस्कियाते ही) "अइसन कवन जल्दी बा ! अबगे त अइनी

www.bhojpurisahityangan.com

ह लोग, कुछ खा-पी लीं तब बाद में बात-चीत होई।"

भदई— (अचरज से) "बाबू साहेब ! ई का ?"

ठा० रामानन्द – (हँस के) "कवन चीज ?"

भदई – "इहे कि रउवा आज ले हमनी के तूँ कहत अइनी लेकिन आज रउवा कह रहल बानी। आज ले हमनी रउवा सामने आँखों उठा ना सकत रहीं स लेकिन रउवा हमनिए के अपना साथे बइठे के आ नास्ता करे के कह रहल बानी ? हमरा बड़ अचरज हो रहल बा।"

ठा० रामानन्द— (मुस्कियाते ही) "अचरज करे के कवनो जरूरत नइखे। आज हमार आंखि खूल गइल बा। एह दुनियाँ में केहू छोट-बड़ नइखे। लेकिन एह गाँव में अपने दुनूं आदमी के छोड़ के कवनो तीसर आदमी एह स्वागत के लाएक नइखे भएल एह से ई स्वागत-सत्कार खाली अपने दुनूं आदमी का मिली आ बराबर मिली।"

भदई— (शक से) "लेकिन अपने कहे के का चाहतानी ?"

ठा० रामानन्द— (चौकन्ना हो के) "देखीं भदई जी आ बिहारी जी हमार कवनो गल्ती नइखे अगर हमरा से कवनो गल्ती भइल त ई कि हम रउवा लोगन के प्रतिभा के चिन्ह ना सकनी। एही से हम रउवा लोगनी का साथ उचित व्यवहार न कइनी। हम अब अपने लोगन के पूरा इज्जत करब। जरूरत परला पर हम रउवा लोगन के पूरा मदद करब। अभईं दू-दू हजार नगद आ पाँच-पाँच बीगहा जमीन रउवा लोगन के दे तानी। एकरा बदला में एतने चाहतानी कि रउवा लोग ई किसान-सभा के धन्धा बन्न क दीं आ हमरा गिरोह में शामिल हो जाईं।"

भदई – (उठ के) "अपने हमनी के दगाबाज समझले बानी पूरा गाँव आज हमनी पर बिश्वास करता आ अपन तकदीर हमनी का हाथ में दे देले बा। हमनी अपना व्यक्तिगत स्वार्थ ला पूरा गाँव का साथ विश्वास-घात ना क सकतानी।

ठा० रामानन्द – (मने-मने खिसियात) एक दफे फेर सोच ल भदई !"

भदई— (प्रण का साथ) "खूब नीमन से सोचनी तबे नू किसान-सभा के झण्डा उठवनी। खांटी किसान-सभा ई अपना जिनगी में एकेबेर सोचे ला, बार-बार ना।"

(दुनू आदमी उठ के जाए लागता)

www.bhojpurisahityangan.com

ठा० रामानन्द— (चिचिया के) "दिलावर खाँ !"

(दिलावर खाँ पाँच गो लठैतन का साथ आवता आ दुनू पर अंधाधून लाठी चलावता ! दुनूं आदमी बेहोस हो के नीचा गिर जात बाड़ें। लठैत लोग दुनूं के उठा के तहखाना में ध आवता।)

ठा० रामानन्द— (मोंछ पर हाथ फेरत) "साला स हमरा से टक्कर लेवे चलल रहलहन स !"

(परदा गिरत बा)

(क्रमशः)

www.bhojpurisahityangan.com

लानत बा आठ करोड़ भोजपुरिहन के कि पाँच-दस त दूर बा, एकहू-दूगो भोजपुरी पत्रिका समय से आ लगातार नइखे निकलि पावत !

भोजपुरी के मान्यता ना मिले के कारन—

(१) भोजपुरिहन में एकता के कमी

(२) भोजपुरी के प्रति पाठकन में हिनाई के भावना आ मुफुत में पढ़े वाली बेमारी

(३) जनवादी साहित्य के अभाव

(४) मिल-सिलेवार ढङ्ग से कवनो काम ना क के मठाधीस बने आ भोजपुरी-उन्नायक कहाए वाली बेमारी

(५) लेखक आ सम्पादक लोगन में काम कम आ खरखाही जादा लूटे वाली भावना

भोजपुरिहन के कुंभकरनी नीन कब टूटी ?

खाली सम्मेलन कइला से कुछो ना होई। स्वस्थ-साहित्य के रचना आ प्रकाशित किताबन के खपत के उपाइ करहीं के पड़ी !

अगिला अङ्क में पढ़ीं—

★ भोजपुरिहा मठाधीस लोगन के पर्दाफास !

★ 'प्रशान्त' जी के नाटक 'जबाब' के अगिला किस्त

★ का लिखाउ ? केकरा खातिर लिखाउ ? उर्फ लेखकीय दायित्व

★ स्वस्थ साहित्य आ स्वस्थ आलोचना के समस्या

★ साथी सुमन के निबन्ध— वर्त्तमान: एक नजर में !

www.bhojpurisahityangan.com

सूचना

भोजपुरी के जानल-मानल साहित्यकार श्री लव शर्मा 'प्रशांत' जी एगो एकावन रूपेया नगद के पुरस्कार के एलान करतानी। जेकर नाम 'स्वर्गीय राम प्रसाद शर्मा पुरस्कार' होई।

ई पुरस्कार हर साल का अन्त में "डहर" में छपल सर्वोत्कृष्ट रचना प ओकरा रचनाकार के प्रथम कोटि के रचना घोषित करे वाला प्रमाण पत्र के साथ दीहल जाई।

★

घड़ी आ जेवर खान-बिखान के,
रउरा खूबसूरती में जे चार चाँद लगा देला!

गजाधर प्र०, सत्यनारायण प्र० ज्वेलरर्स

मोतिहारी से खरीदीं

सुन्नर, शुद्ध आ सस्ता,

किसिम किसिम के मन-पसन्द डिजाइनवाला गहना हाजिर बा!

जनवादी साहित्य मोर्चा खातिर रजनी कान्त राकेश द्वारा सम्पादित आ प्रकाशित आ युगान्तर प्रेस मोतीहारी में मुद्रित।

www.bhojpurisahityangan.com